पूज्य महन्त जी की अघतन लोकयात्रा

प्रदीप राव

भारतीय संस्कृति की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है आत्मशुद्धि अर्थात् स्वयं शुद्धीकरण की। इसी विशेषता के परिणामस्वरूप वैदिक धर्म में जब कुछ विकार आया तो महात्मा बुद्ध पैदा हुए। जब बौद्ध धर्म में विकार उत्पन्न हुआ तो गुरु श्री गोरक्षनाथ तथा शंकराचार्य का आविर्भाव हुआ। इस्लामी शासन में जब विकृतियों की सम्भावनाएँ बढ़ीं तो भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ।[१] इसी शृंखला को बनाये रखने वाले महापुरुषों की जो परम्परा स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, वीर विनायक दामोदर सावरकर, महामना मदन मोहन मालवीय, डॉ. केशवबलिराम हेडगेवार, सरदार वल्लभ भाई पटेल, माधव सदाशिव गोलवलकर गुरुजी, महन्त दिग्विजयनाथ तक अनवरत दिखाई देती है। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज उसी परम्परा के वर्तमान में जाज्वल्य नक्षत्र हैं। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर के रूप में अवेद्यनाथ जी महाराज ने जिस गुरु का उत्तराधिकार प्राप्त किया वे दिग्विजयनाथ जी महाराज हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता की वैचारिक विरासत की एक यशस्वी परम्परा सौंपकर ब्रह्मलीन हुए थे। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को अपने गुरुदेव से जो विरासत मिली उसका अन्दाजा इन तथ्यों से लगाया जा सकता है कि-महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गुलाम भारत में देश की आजादी के लिए कांग्रेस में रहते हुए भी हिन्दू हितों की रक्षा के लिए तत्पर रहते थे। १९३४ ई. के पूर्व उन्होंने कांग्रेस की उन नीतियों का विरोध किया था, जिनसे हिन्दू जाति और धर्म के उपर किसी प्रकार के आघात की आशंका थी। १९३९ ई. में उन्होंने अखिल भारतवर्षीय अवधूत वेष बारह पंथ योगी महासभा की स्थापना की तथा साधु सम्प्रदाय को एक नवीन दिशा प्रदान की तथा निष्क्रियता और एकान्तिकता के स्थान पर समाज-सापेक्ष कार्यों की ओर प्रेरित किया। भारत की संसद में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने गरजते हुए कहा था-'जब तक धर्मप्राण भारत की पवित्र भूमि पर गोमाता के रक्त की एक बूँद भी गिरती रहेगी; तब तक देश अशान्ति की भट्ठी में जलता रहेगा। मैं तो हिन्दू धर्म का वकील हूँ, संन्यासी होते हुए राजनीति में केवल इसलिए उतरा हूँ, क्योंकि हिन्दू संस्कृति और सभ्यता पर आज चारों ओर से प्रहार हो रहे हैं। वे कहते थे राष्ट्र एक सांस्कृतिक इकाई है। किसी भूखण्ड में निवास करने वाले उस समूह को ही राष्ट्र कहा जाता है, जो भू-खण्ड की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, इतिहास आदि को मानता हुआ परस्पर एकता की अनुभूति रखता हो। अतः भारत हिन्दू राष्ट्र है, ऐसा हिन्दू राष्ट्र जहाँ किसी पर अत्याचार नहीं होगा। इस हिन्दू राष्ट्र में रहने वाले प्रत्येक निवासी के साथ न्याय होगा। प्रत्येक नागरिक को अपनी उपासना पद्धति अपनाने की पूर्ण स्वतन्त्रता होगी, परन्तु राष्ट्र के प्रत्येक निवासी को यहाँ की संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, इतिहास, साहित्य और राष्ट्रीय महापुरुषों को सम्मान की दृष्टि से देखना होगा। वस्तुतः हिन्दुत्व ही वह शक्ति है जो विस्तृत भारतीय भूभाग वाले विभिन्न भाषा-भाषी करोड़ों जनता को एक सूत्र में बाँध सकती है। इस वैचारिक अधिष्ठान पर निर्मित विराट व्यक्तित्व के धनी गुरु की भौतिक-

प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

आध्यात्मिक विरासत को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने न केवल सँभाला अपितु गोरक्षपीठ को कई नये आयामों से भी जोड़ा। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के बहुआयामी विराट व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में बाँध पाना असम्भव है तथापि विविध स्रोतों से ज्ञात किंचित तथ्यों के आधार पर उनके व्यक्तित्व को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का बचपन का नाम कृपाल सिंह विष्ट था। आपके पिता श्री रायसिंह विष्ट हिमालय की गोद में बसे देवभूमि के पौड़ी गढ़वाल के काण्डी ग्राम के निवासी थे। १८ मई १९१९ को काण्डी ग्राम में जन्मे बालक को कौन जानता था कि एक दिन वह बालक देश-विदेश के हिन्दू धर्माचार्यों का नेतृत्व करेगा और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर राष्ट्रीय एकता-अखण्डता के उस यज्ञ का आचार्य बनेगा जिसकी प्रज्वलित अग्निशिखाओं से हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों, विशेषकर छूआछूत को भस्म करने की प्रेरणा एवं संदेश प्राप्त होगा। किन्तु ईश्वर ने उन्हें भारत भूमि पर इसी महान कार्य हेतु भेजा था सो उसी अनुरूप परिस्थितियाँ करवट लेने लगीं।

महन्त जी से जब उनके बचपन की स्मृतियों पर चर्चा की गई तो अपने चिर-परिचित दिव्य मुस्कान के साथ वे बोल पड़े कि संन्यासी का बचपन नहीं होता। दीक्षा के साथ ही पिछले जीवन से उसका नाता टूट जाता है और वह नया जीवन प्राप्त करता है। किन्तु अनेक बार के आग्रह पर एक क्षण मौन के पश्चात महन्त जी अपने बचपन की स्मृतियों में लौटते हुए बताते हैं, ''मुझे अपनी माँ का नाम याद नहीं है क्योंकि जब मैं बहुत छोटा था मेरे माता-पिता की अकाल मृत्यु हो गई। मैं दादी की गोद में पल रहा था। उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा पूर्ण होते ही दादी का भी स्वर्गवास हो गया। परिणामतः मेरा मन इस संसार के प्रति उदासीन होता गया तथा वैराग्य का भाव मन में घर करता गया।''

महन्त जी कहते हैं कि इसी वैराग्य एवं विरक्ति की भावनानुभूति में गृहत्याग के साथ ऋषिकेश में संन्यासियों का साथ मिला। सत्संग से भारतीय धर्म-दर्शन में अध्ययन की रुचि विकसित हुई। उस समय वाराणसी भारतीय धर्म दर्शन के अध्ययन का प्रमुख केन्द्र था। मैने काशी में संस्कृत भाषा के अध्ययन के साथ भारतीय धर्म-दर्शन एवं योग-दर्शन का अध्ययन एवं अनुशीलन किया।

महन्त जी से जब यह जानना चाहा कि गृह त्याग के बाद वे कितनी बार अपने पैतृक गाँव गये, महन्त जी का जवाब विस्मयकारी था। उनके इस प्रश्न के उत्तर में ही बाल्यावस्था से ही महन्त जी की निवृत्तिमार्गी प्रवृत्ति का पता चल जाता है। संन्यासी होने के बाद वे एक बार अपने पितृगृह गये। वह भी अपने नैतिक एवं धार्मिक कर्तव्यों की पूर्ति हेतु। महन्त जी बताते हैं-''मेरे पिताजी तीन भाई थे। मैं अपने पिताजी का इकलौता पुत्र था। गृहत्याग एवं संन्यास के दौरान एक बार मेरे एक चाचा ऋषिकेश आये थे। दूसरे चाचा के मन में यह भ्रम उत्पन्न हो गया कि मैं अपनी पूरी सम्पत्ति एक ही चाचा को न लिख दूँ। मुझे अपने हिस्से की पूरी पैतृक सम्पत्ति दोनों चाचा को बराबर देनी थी अतः मैं इसी कार्य हेतु गया। न्यायालय में मजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित होकर मैंने

अपनी पैतृक सम्पति दोनों चाचा के नाम बराबर-बराबर कर देने की अपनी संस्तुति दी तो मजिस्ट्रेट ने कहा कि आप अभी किशोर हैं, संन्यासी जीवन बड़ा कष्टमय होता है, कल पुनः गृहस्थ जीवन में लौटने की आपकी इच्छा हो सकती है, अतः अपनी सम्पत्ति देने से पूर्व एकबार और सोच लीजिए।'' महन्त जी ने उसी समय मजिस्ट्रेट को जो उत्तर दिया वह इस बात का स्पष्ट साक्ष्य है कि वे पूर्णतः संन्यासी स्वभाव प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने कहा-''मैं अतिशीघ्र इस सम्पत्ति से छुटकारा पाना चाहता हूँ ताकि संन्यास जीवन से विमुख होने की सम्भावना ही शेष न रहे।'' महन्त जी के दृढ़ निश्चय एवं तेजस्वी मुखमण्डल की चमत्कृत आभा से निरुत्तर मजिस्ट्रेट ने इनकी सम्पत्ति दोनों चाचा के नाम स्थानान्तरित कर दी। इस प्रकार संन्यासी जीवन से पूर्व के अपने जीवन से पूर्णतः नाता तोड़कर धार्मिक-आध्यात्मिक दुनिया की ओर बढ़े उनके कदम फिर वापस नहीं मुड़े।

किशोरावस्था में ही महन्त जी ने कैलाश मानसरोवर की यात्रा की। यह यात्रा उनके संन्यासी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुई। महन्त जी बताते हैं-''उत्तराचंल के बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि तीर्थस्थलों की यात्रा और अनेक संत-महात्माओं से मिलकर अपनी धार्मिक-आध्यात्मिक एवं योग विषयक जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु बात-चीत तथा सत्संग हम संन्यासियों की जीवनचर्या थी। बद्रीनाथ यात्रा के दौरान ही कैलाश-मानसरोवर जाने की इच्छा जागृत हुई। उस समय कैलाश-मानसरोवर का मार्ग और भी दुर्गम था। पैदल यात्रा में लगभग बीस दिन लगते थे। तीन अन्य संन्यासियों के साथ स्थान-नीति को पार कर हम मानसरोवर की यात्रा पर चल पड़े। हम लोगों को यह सूचना थी कि मीठा सत्तू कैलाश मानसरोवर के आसपास के निवासी पसन्द करते हैं और छीन लेते हैं; अतः हम लोग नमकीन सत्तू अपने पास रख हुए थे। कैलाश-मानसरोवर की यात्रा से एक अलग तरह की आध्यात्मिक अनुभूति हुई और मन में ईश्वर के साथ-साथ भारत माता की इस विस्तारित भूमि के साथ रागात्मक एकता की अद्‌भुत अनुभूति हुई। कैलाश मानसरोवर की यात्रा से वापस आते समय अल्मोड़ा से कुछ आगे बढ़े ही थे कि मुझे 'हैजा' हो गया। अत्यधिक उल्टी-दस्त के कारण मैं अचेत हो गया, मेरे साथ के संन्यासियों ने मान लिया कि अब मेरा जीवित बचना कठिन है, अतः वे मुझे उसी दशा में छोड़कर आगे चल दिये। दैवी कृपा से शाम को मुझे होश आया और शरीर में चेतना का संचार हुआ तो अपने आपको अकेला पाकर इस नश्वर संसार का मर्म समझा। मेरा मन विरक्ति और वेदना से भर गया। मैं अकेले धीरे-धीरे चलते हुए हरिद्वार पहुँचा। अब मुझे लगता है कि इस घटना के पीछे ईश्वर की इच्छा छिपी थी। शायद ईश्वर मुझे 'सच' का साक्षात्कार कराना चाहते थे। कैलाश-मानसरोवर की इस यात्रा से मेरा मन बहुत विचलित हो चुका था। मैं संसार की नश्वरता के साथ आत्मा की अमरता के ज्ञान की खोज में बेचैन था कि मेरी भेंट योगी निवृत्तिनाथ जी से हो गई। योगी निवृत्तिनाथ जी के योग, आध्यात्मिक दर्शन तथा नाथपंथ के विचारों से मैं प्रभावित होता चला गया। योगी निवृत्तिनाथ जी का सान्निध्य मुझे अच्छा लगने लगा, उनके साथ रहकर योग-साधना में मुझे शांति मिलने लगी। नाथपंथ के सामाजिक समन्वयवादी दृष्टिकोण एवं हठयोग-साधना की ओर मैं खिंचता चला गया। यद्यपि कि उस समय तक मैं नाथपंथ में दीक्षित नहीं हुआ था, मात्र ब्रह्मचारी संत था।

निवृत्तिनाथ जी के साथ अभी योग-साधना में कुछ माह बीते ही थे कि प्रकृति ने वर्षा ऋतु का स्वागत किया। चूँकि ऋषिकेश में बरसात के मौसम में मच्छर बहुत लगते थे और अक्सर लोगों को मलेरिया हो जाया करता था; अतः संत-महात्मा वर्षा ऋतु में ऋषिकेश से अन्यत्र चले जाते थे। योगी निवृत्तिनाथ जी के साथ मैं भी बंगाल के मेमन सिंह जाने हेतु वर्षावास के लिए चल पड़ा। योगी निवृत्तिनाथ जी द्वारा मैं तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के सामाजिक परिवर्तन, हिन्दुत्व पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीयता के प्रति समर्पण एवं जनान्दोलनों के नेतृत्व की चर्चा सुना करता था। इस प्रकार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के प्रति मेरे मन में श्रद्धा का बीज पहले से ही अंकुरित हो चुका था। मेमन सिंह जाते समय निवृत्ति नाथ जी गोरक्षनाथ मंदिर में एक रात विश्राम हेतु रुके। योगी निवृत्तिनाथ जी को गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी 'चाचा' कहते थे; क्योंकि योगी निवृत्तिनाथ एवं योगी गम्भीरनाथ के शिष्य थे। उन्होंने निवृत्तिनाथ जी का गोरक्षनाथ मंदिर में बड़े ही भावपूर्ण ढंग से आवभगत की। यह घटना १९४० की है। गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज से मेरी यह पहली भेंट थी। दूसरे दिन जब हम बंगाल जाने हेतु तैयार हुए तो महन्त जी ने मुझसे अपना शिष्य एवं उत्तराधिकारी बनने की इच्छा व्यक्त की। किन्तु अभी मैं न तो नाथपंथ को ठीक से समझ पाया था और न ही किसी मठ का महन्त बनने के बारे में कुछ सोचा था। संन्यासी जीवन जीते हुए धर्म-दर्शन और योग-साधना के बारे में अभी मैं बहुत कुछ जानने की इच्छा का शमन नहीं कर सकता था, सो बड़ी विनम्रतापूर्वक अपनी अनिच्छा बताकर मैं निवृत्तिनाथ जी के साथ बंगाल के मेमन सिंह के लिए निकल पड़ा। मेमन सिंह में मेरी भेंट उद्भट् विद्वान एवं दार्शनिक अक्षय कुमार बनर्जी से हुई। उनके साथ भारतीय-दर्शन और नाथपंथ के बारे में विस्तार से बातचीत होती रही और मैं वहाँ इनके दर्शन साहित्य का अध्ययन करता रहा। गोरक्षनाथ जी के बारे में एवं गोरक्षदर्शन का अध्ययन करने का भी अवसर मुझे सर्वप्रथम यहीं प्राप्त हुआ।

वर्षाऋतु के पश्चात हम वापस ऋषिकेश आ गये। ऋषिकेश में रहकर मैंने योगी शान्तिनाथ द्वारा लिखित प्राच्यदर्शन समीक्षा का अध्ययन करने लगा और शान्तिनाथ जी के बारे में मेरी उत्सुकता बढ़ती गयी। योगी निवृत्तिनाथ जी ने बताया कि शान्तिनाथ जी भी योगी गम्भीरनाथ जी के ही शिष्य हैं और वे कराची से करीब १० मील दूर एक सेठ के बागीचे में आश्रम बनाकर रहते हैं। योगी निवृत्तिनाथ जी से ही ज्ञात हुआ कि योगी शान्तिनाथ जी दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान और नाथपंथ के ज्ञाता होने के साथ-साथ स्वतंत्रता सेनानी भी हैं। अंग्रेजों द्वारा उन्हें ढाका षड्यन्त्र में बन्दी बनाया गया था। शान्तिनाथ जी से मिलने की मेरी उत्सुकता को देखते हुए योगी निवृत्तिनाथ जी ने योगी शान्तिनाथ जी के यहाँ जाने हेतु योजना बनायी और मुझे लेकर कराची के लिए निकल पड़े।

हम योगी शान्तिनाथ के यहाँ पहुँचे और उनके आश्रम में रहने लगे। उनके साथ भारतीय दर्शन के विविध विषयों पर गंभीर चर्चा में मेरा मन रमता गया। उसी दौरान गम्भीरनाथ जी महाराज एवं दिग्विजयनाथ जी महाराज के बारे में वे कुछ न कुछ बताया करते थे। नाथपंथ के सामाजिक क्रान्ति के विविध पक्षों ने मुझे बहुत हद तक प्रभावित किया। योग के प्रति मैं शुरू से आकर्षित था। गुरु श्री गोरक्षनाथ द्वारा प्रतिपादित 'योग दर्शन' और

'गोरखवाणी' के अध्ययन का अवसर भी मुझे शान्तिनाथ के सान्निध्य में मिला। दो योग्य संन्यासियों के सत्संग में मैं रम चुका ही था। तभी दैवी कृपा से एक घटना ने सब कुछ बदल दिया। हम जिस सेठ के बागीचे में आश्रम बनाकर रहते थे, हमारे भोजन आदि की व्यवस्था उसी सेठ के द्वारा की जाती थी। हमारे भण्डारे में तीन दिन से घी समाप्त हो गया था। सूचना पाने के बाद भी सेठ ने भण्डारे में घी नहीं भिजवाया तो हमें यह महसूस हुआ कि हम सेठ पर बोझ बन रहे हैं और सेठ हमारी भोजनादि की व्यवस्था प्रसन्न मन से नहीं कर रहा है। शान्तिनाथ जी इस घटना से बहुत दुःखी हुए और उस स्थान को छोड़ने का निर्णय ले लिया। इसी घटना से दुःखी शान्तिनाथ जी ने कहा कि गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी ने अपने योग्य उत्तराधिकारी के लिए मुझसे कहा था। मैं पत्र लिख देता हूँ तुम वहीं चले जाओ। उसी समय निवृत्तिनाथ जी ने १९४० में गोरखपुर प्रवास के दौरान महन्त दिग्विजयनाथ जी द्वारा मुझे उत्तराधिकारी बनाने के प्रस्ताव के विषय में भी शान्तिनाथ जी से बताया। योगी शान्तिनाथ जी ने जोर देकर मुझे गोरखपुर जाने का निर्देश दिया। तब मैंने उनसे विनयवत् आग्रह किया कि महन्त दिग्विजयनाथ जी द्वारा दो वर्ष पूर्व यह प्रस्ताव किया गया था, अब तक वे हमारी प्रतीक्षा में बैठे नहीं होंगे। किसी न किसी को वे अपना उत्तराधिकारी बना चुके होंगे। मेरी बात पर योगी शान्तिनाथ जी गम्भीर हुए और उन्होंने महन्त दिग्विजयनाथ जी के पास मुझे उत्तराधिकारी बनाने का पत्र डाक द्वारा भेज दिया। पत्र पाने के बाद, जैसे कि महन्त दिग्विजयनाथ जी मेरी प्रतीक्षा में ही बैठे हों, उन्होंने मुझे गोरखपुर आने की स्वीकृति के साथ-साथ यात्रा व्यय भी भेज दिया। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि भविष्य में घटने वाले घटनाक्रमों पर उस अन्तर्यामी योगी शान्तिनाथ की दृष्टि पड़ चुकी थी। मैं इसे दैवी आदेश मानकर निवृत्तिनाथ जी के साथ गोरखपुर आया। गोरक्षनाथ मंदिर में जब मैं महन्त दिग्विजयनाथ जी के सम्मुख प्रस्तुत हुआ तो उनके मुख-मण्डल पर दिव्य आभामयी मुस्कान ने मुझे सदा-सदा के लिए उनका अपना बना दिया। मैंने मन ही मन उनको अपने गुरु के रूप में वरण किया और उनके साथ रहने लगा। उनकी मनसा-वाचा-कर्मणा में अद्‌भुत एकरूपता तथा हिन्दुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रति पूर्ण समर्पण से युक्त विराट् व्यक्तित्व के धनी महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के समक्ष मैं समर्पित होता चला गया।"

नाथपंथ में दीक्षा- महन्त अवेद्यनाथ जी की कृपाल सिंह विष्ट से संन्यासी बनकर 'अवेद्य' बनने की वास्तविक यात्रा नाथपंथ में दीक्षा के साथ प्रारम्भ हुई। ८ फरवरी सन् १९४२ ई. को गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी द्वारा इन्हें विधिवत दीक्षा देकर अपना शिष्य एवं उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया। वस्तुतः यह वर्ष भारत के स्वतंत्रता संग्राम का महत्त्वपूर्ण वर्ष था। महन्त दिविग्जयनाथ जी हिन्दू महासभा के माध्यम से आजादी की लड़ाई के एक संन्यासी योद्धा थे। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन की घोषणा से देशभर के आजादी के योद्धा हरकत में आ चुके थे। महन्त दिग्विजयनाथ जी भी नेपाल सहित इस सम्पूर्ण क्षेत्र में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन-जागरण अभियान में व्यस्त रहते थे तथा जर्मनी एवं जापान की मदद से सक्रिय आजाद हिन्द फौज की सहायता कर रहे थे। परिणामतः अवेद्यनाथ जी को गोरक्षनाथ मन्दिर की व्यवस्था की पूर्ण

जिम्मेवारी उठानी पड़ी। महन्त दिग्विजयनाथ जी के निर्देशन में वे गोरक्षनाथ मन्दिर से जुड़े विभिन्न धर्मस्थानों एवं संस्थानों की देख-रेख में निष्णात होते गये। महन्त दिग्विजयनाथ जी को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहने का पूरा अवसर प्राप्त हुआ। परिणामतः १९४४ में गोरखपुर में हिन्दू महासभा का ऐतिहासिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसमें श्यामा प्रसाद मुखर्जी भी सम्मिलित हुए।

इसी कालखण्ड में भारत विभाजन की माँग जोर पकड़ती जा रही थी। मुस्लिम लीग के नेतृत्व में देशभर में साम्प्रदायिक दंगों की आग सुलग रही थी। जगह-जगह हिन्दुओं पर संगठित साम्प्रदायिक आक्रमण आरम्भ हो चुके थे। ऐसे में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्व में हिन्दू महासभा उत्तर भारत में भारत विभाजन के तीव्र विरोध के साथ-साथ हिन्दू समाज को संगठित करने के भगीरथ प्रयास में लगी हुई थी। अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा गोरक्षनाथ मन्दिर की व्यवस्था संभाल लेने से महन्त दिग्विजयनाथ जी को सामाजिक-राष्ट्रीय आन्दोलन हेतु पर्याप्त अवसर उपलब्ध हुए।

खण्डित भारत की स्वतंत्रता, इस्लामी आतंक, साम्प्रदायिक दंगे और भीषणतम नरसंहारों के साये में प्राप्त हुई। अभी इसकी आग बुझी नहीं कि १९४८ में महात्मा गाँधी की हत्या हो गयी। महन्त दिग्विजयनाथ जी की सामाजिक-राजनीतिक सक्रियता से घबड़ाई सरकार को बहाना मिल गया और षड्यन्त्रपूर्वक महन्त जी को महात्मा गाँधी की हत्या के तथाकथित षड्यन्त्र में गिरफ्तार कर उन्नीस महीने जेल में बन्द कर दिया गया तथा गोरक्षनाथ मंदिर की समस्त चल-अचल सम्पत्ति जब्त कर ली गई। उस दौरान अवेद्यनाथ जी महाराज ने नेपाल में रहकर गोपनीय ढंग से गोरक्षनाथ मन्दिर की व्यवस्था एवं महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को निर्दोष सिद्ध करने हेतु सफल प्रयास किया। गाँधी हत्या के समय की एक घटना का जिक्र करते हुए महन्त अवेद्यनाथ कहते हैं, ''नेपाल में रहकर मैं गोरक्षनाथ मन्दिर एवं महन्त जी के मुकदमे की पैरवी कर रहा था कि लखनऊ से प्रकाशित समाचार पत्र 'नवजीवन' ने यह दुष्प्रचारित कर दिया कि महात्मा गाँधी की हत्या महन्त जी की रिवाल्वर से की गई। यह तथ्य भी मुकदमे में जुड़ गया। तब मैंने गोरखपुर के जिलाधिकारी से सम्पर्क कर यह स्पष्ट किया कि महन्त जी के रिवाल्वर की जाँच कर सकते हैं। जिलाधिकारी ने आकर स्वयं जाँच की।'' और फिर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हँसते हुए बताते हैं कि जेल से छूटने के बाद महन्त जी ने 'नवजीवन' अखबार के मालिकानों को क्षमा कर दिया।

स्वातन्त्र्योत्तर भारत में हिन्दू समाज की एकता का प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो चुका था। जन्मना जाति व्यवस्था के श्रेष्ठतावाद एवं अस्पृश्यता जैसी विकृतियों से हिन्दू समाज के खण्डित तथा कमजोर होने की संभावनाएँ प्रबल होती जा रही थीं। भारतीय शासन विकृत धर्म निरपेक्षता तथा वोट बैंक की राजनीति के अन्तर्गत अंग्रेजों की 'बाँटो और राजकरो' की नीति का ही अनुगामी बना हुआ था। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने सामाजिक-शैक्षिक पुनर्जागरण के साथ-साथ राजनीतिक मंच पर हिन्दू समाज की सिंह गर्जना का अभियान आरम्भ किया और उनके उत्तराधिकारी महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज उनके सक्रिय सहयोगी एवं अनुगामी बने।

राजनीति में महन्त अवेद्यनाथ-

धर्म की रक्षा के लिए राजनीति महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को अपने गुरुदेव से विरासत में प्राप्त हुई। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के साथ-साथ ही शिष्य रूप में ही महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज राजनीतिक मंच पर भी सक्रिय हो चुके थे। १९६२ में उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में मानीराम विधानसभा से विजयी होकर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज पहली बार विधानसभा के सदस्य बने और लगातार १९७७ई. तक के विधानसभा चुनाव तक मानीराम विधानसभा से चुनाव में विजयी होते रहे। १९८० ई. में मीनाक्षीपुरम् में हुए 'धर्म परिवर्तन' की घटना से विचलित महन्त जी राजनीति से संन्यास लेकर हिन्दू समाज की सामाजिक विषमता के विरुद्ध जन-जागरण के अभियान पर चल पड़े।

लोकसभा चुनाव में पहली बार महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर १९६९ई. के उपचुनाव में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को गोरखपुर की जनता ने ससम्मान संसद में भेज दिया। पुनः १९८९ ई. में श्रीरामजन्म भूमि आन्दोलन जब अपने उत्कर्ष पर था, तथाकथित सेकुलर राजनीतिक दल यह चुनौती देने लगे कि इस आन्दोलन को जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है। इन परिस्थितियों में अयोध्या में हुए धर्म संसद में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से लोकसभा चुनाव जीतकर सेकुलर दलों को जवाब देने का प्रस्ताव पास हुआ और महन्त जी हिन्दू महासभा से १९८९ ई. के लोकसभा चुनाव में श्रीरामजन्म भूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण के मुद्दे पर सम्पूर्ण हिन्दू सन्त-महात्माओं के समर्थन से चुनावी जंग में कूदे और विजयी हुए। इस चुनाव में भारतीय जनतापार्टी और श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व वाले जनता दल के गठबन्धन का प्रत्याशी भी चुनाव मैदान में था। तत्पश्चात लोकसभा के १९९१ के मध्यावधि चुनाव तथा १९९६ के लोकसभा चुनाव में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज विजयी होते रहे।

लोकसभा में सम्मानित सदस्य होते हुए महन्त जी १९७१, १९९० एवं १९९१ में भारत सरकार के गृहमंत्रालय की परामर्शदात्री समिति के सदस्य रहे। राजनीति में भी महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अपराजेयता सभी ने स्वीकारी। १९९६ के चुनाव के समय दैनिक समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा' ने अपनी टिप्पणी में लिखा- मौजूदा सांसद अवेद्यनाथ सुप्रसिद्ध गोरखनाथ मन्दिर के पीठाधीश्वर हैं। वह जितने बड़े सन्त हैं उतने ही बड़े राजनेता भी हैं। इस मण्डल में वह इकलौते शख्स हैं जिन्होंने पाँच बार विधानसभा और तीन बार लोकसभा का चुनाव जीता है। वह १९६२ में पहली बार विधायक बने। हिन्दू महासभा से १९६७, १९६९, १९७४ और १९७७ में विधायक चुने गये। स्पष्ट है कि किसी का राज, किसी का प्रभाव, किसी की लहर उनकी जीत को न रोक सकी। यहाँ तक कि जनता लहर में भी वह अपराजेय रहे।[२] १९९८ ई. के लोकसभा चुनाव में उन्होंने अपने शिष्य एवं उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ जी महाराज को चुनाव लड़ने का निर्देश दिया। १९९८ से अद्यतन गोरखपुर की संसदीय सीट पर गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की कृपा एवं आशीर्वाद से पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज अपराजेय धर्मयोद्धा की प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुके हैं।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सदैव राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं भारतीय संस्कृति की पुनर्प्रतिष्ठा तथा हिन्दू समाज की रक्षा में अपनी राजनीतिक भूमिका निर्धारित की।

१० नवम्बर १९८९ को महाराणा प्रताप इण्टर कालेज के मैदान में आयोजित जनसभा में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि मैं राजनीति से संन्यास ले चुका था किन्तु सरकार हिन्दू समाज के साथ अन्याय कर रही है। सरकार अपने को धर्मनिरपेक्ष कहती है किन्तु एक समान कानून नहीं बनाती। हिन्दू पर अलग कानून और मुस्लिम पर अलग कानून लागू होते हैं।

१३ नवम्बर १९८९ के लोकसभा चुनाव के दौरान महन्त जी ने कहा-"४० वर्षों से जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद तथा तुष्टीकरण की राजनीति के कारण देश पुनः टूटने के कगार पर पहुँच गया है। पंजाब जल रहा है, कश्मीर और पूर्वांचल अलगाव की ओर बढ़ रहा है। देश और अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठावान हिन्दू समाज को तोड़ने और अल्पसंख्यक बनाने के षड्यन्त्र के तहत तरह-तरह के कानून बनाये जा रहे हैं।" महन्त जी ने आगे कहा कि जब राजनीति विपथगामिनी हो जाय तो उसे नियन्त्रित करने के लिए धार्मिक नेतृत्व का हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है। वर्तमान परिस्थिति में यदि मैं मूक दर्शक बना रहूँ तो यह देश और समाज के साथ गद्दारी होगी।[३] ६ अप्रैल १९९१ कों महन्त जी ने पुनः कहा कि आज भारत एक ऐसी सरकार की आवश्यकता महसूस कर रहा है जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की पक्षधर हो तथा जिसके लिए हिन्दू समाज अछूत न हो। परसों वोट क्लब पर हिन्दू समाज के ऐतिहासिक प्रदर्शन ने यह साबित कर दिया है, कि अब देश तुष्टीकरण नीति की पोषक सरकारों को सहन नहीं करेगा।[४] महन्त जी के ये विचार प्रतिनिधि उदाहरण हैं राजनीति में उनकी भूमिका के सन्दर्भ में। (हिन्दू महासभा और महन्त जी तथा संसद एवं विधान सभा में महाराज जी के सन्दर्भ में इसी ग्रन्थ में अलग खण्ड में विस्तार से विवरण संकलित)

संस्कृत भाषा के प्रबल पक्षधर-

१९८६ की नयी शिक्षा नीति में जब 'त्रिभाषा' के अन्तर्गत समाहित संस्कृत विषय को बाहर किया गया तो भारतीय संस्कृति के अमर सपूत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सरकार पर विफर पड़े थे। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा-'संस्कृत को नई शिक्षा नीति में हटाकर राजनीतिज्ञों ने आत्मघाती कृत्य किया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी भारतीय राजनेता गुलाम मानसिकता के शिकार हैं। भारतीय संस्कृति और धर्म भारत का प्राण है। हमारी सम्पूर्ण सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में ही संरक्षित है। संस्कृत से अनजान भावी पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक विरासत से अनभिज्ञ होगी। ३ मार्च १९८७ को सनातन धर्म संस्कृत महाविद्यालय लखीमपुर खीरी (उत्तर प्रदेश) में 'विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम्' द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महन्त जी ने कहा था- इतिहास साक्षी है कि कभी इस देश में पनिहारिन भी संस्कृत में वार्तालाप करती थी। दुःख है कि आज उसी देववाणी संस्कृत को 'त्रिभाषा' से निकाल दिया गया है। संस्कृति और संस्कृत की रक्षा के लिए सम्पूर्ण भेदभाव छोड़कर हिन्दू समाज एकजुट हो। महन्त जी ने समाज का आह्वान करते हुए कहा

कि-संस्कृत कर्मकाण्डों और पण्डितों की भाषा मात्र न रहे, यह जनभाषा बने, इसका प्रयास होना चाहिए।

हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता के साधक :

गोरक्षपीठ गुरु श्री गोरक्षनाथ द्वारा प्रवर्तित 'नाथपंथ' का प्रधान केन्द्र है। किन्तु पांथिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सदैव इस पीठ ने हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता को महत्त्व दिया तथा सम्पूर्ण धार्मिक-सामाजिक क्रियाकलाप इसी वैचारिक अधिष्ठान के परिप्रेक्ष्य में संचालित किये जाते हैं। गुरु श्री गोरक्षनाथ मन्दिर का विकसित भव्य स्वरूप 'हिन्दुत्व' के वैचारिक अधिष्ठान का साक्षात् स्वरूप प्रस्तुत करता है। मन्दिर प्रांगण में गुरु श्री गोरक्षनाथ के साथ-साथ हिन्दू धर्म के सभी प्रमुख देवी-देवताओं के मन्दिर, उनकी मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं जिनकी प्रतिदिन पूजा-अर्चना होती है। इस सन्दर्भ में जब महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से पूछा कि नाथपंथ निर्गुण साधना में विश्वास रखता है। गोरखनाथ मन्दिर में विभिन्न अवतारों की मूर्तियों की स्थापना की कल्पना कैसे और कब की गई? महन्त जी का उत्तर था- 'नाथपंथ की स्थापना का मूल उद्देश्य ही सामाजिक संकीर्णता का विरोध करना एवं समन्वयवादी समतामूलक समाज की स्थापना करना था। सगुण-निर्गुण की संकीर्ण सोच में नाथपंथ का दर्शन विश्वास ही नहीं करता। नाथपंथ के आदिगुरु भगवान् शिव हैं जो शक्ति के बिना अधूरे हैं। शक्ति के बिना शिव मात्र शव है। शक्ति का ही रूप देवी दुर्गा और काली भी हैं। ब्रह्म का स्वरूप तो साकार या निराकार हो सकता है, परन्तु 'गुरु' जिसकी महिमा एवं महत्ता का महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ जी ने अतिशय गुणगान किया है और जो जीव के शिव या ब्रह्म से मिलन का माध्यम होता है, वह तो साकार और सगुण ही होता है। हमने इसी दर्शन को आत्मसात किया। भारतीय धर्म एवं संस्कृति में पंथों का अभ्युदय संघर्ष का नहीं समन्वय और निरन्तर शुद्धीकरण एवं विकास का सूचक है। भारतीय संस्कृति की विशेषता ही 'विविधता में एकता' का है। 'हिन्दुत्व' में सभी पंथ, भारत के सभी दर्शन एवं समस्त भारतीय विचारधाराएँ समाहित हैं। हिन्दुत्व के उसी स्वरूप को स्वीकार कर मैंने गोरक्षनाथ मन्दिर में 'हिन्दुत्व' का समग्र दर्शन प्रस्तुत करने का प्रयास किया। अपने गुरुदेव की स्मृति में 'महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति भवन' के सभागार में भारत के सम्पूर्ण पंथों-विचारधाराओं के प्रतिनिधि देवी-देवताओं एवं महापुरुषों की प्रतिष्ठा की गई।' महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जब आज यह कहते हैं, इसका यह तात्पर्य नहीं कि उनकी आज की वैचारिक प्रौढ़ता से ये विचार उपजे हैं वरन् लगातार वे 'हिन्दुत्व' को ही राष्ट्रीयता का पर्याय मानते रहे हैं। महन्त जी कहते हैं कि विश्व का नियम है कि राष्ट्र का निर्माता उस राष्ट्र का बहुसंख्यक समाज ही होगा। राष्ट्रीयता भी उसी बहुसंख्यक समाज के अनुसार तय होती है। जब द्विराष्ट्रवाद के सिद्धान्त पर भारत बँट गया तभी भारत हिन्दू राष्ट्र हो गया।

२३ सितम्बर १९८९ को गोरखपुर में महन्त जी ने हिन्दू समाज को चेताते हुए कहा कि ईसाई मिशनरियाँ हिन्दुस्तान में ही हिन्दू समाज के धर्मान्तरण के बहाने राष्ट्रान्तरण कर अल्पसंख्यक बनाकर भारत को पुनः गुलाम बनाने का षड्यन्त्र कर रही है। भारत सरकार भी इस षड्यन्त्र में जाने-अनजाने शामिल है। भारत सरकार द्वारा स्वामी रामकृष्ण मिशन के स्वामी रंगनाथ को इसलिए राष्ट्रीय एकता का पुरस्कार दिया गया, क्योंकि उन्होंने कहा

था कि हम हिन्दू नहीं हैं।[५] ६ मार्च को वृन्दावन के सोहम आश्रम में आयोजित अखिल भारतीय सन्त सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महन्त जी ने कहा था-हिन्दू साम्प्रदायिक नहीं है। हिन्दुओं में ऐसे बहुत से ऐसे घर मिलेंगे जहाँ एक बेटा सिख, एक बेटा सनातनी है, तो एक बेटा आर्य समाजी। संसार में प्रताड़ित तथा अपमानित यहूदी समाज को हिन्दू भारत ने ही संरक्षण दिया। इस्लामीकरण के अभियान से आतंकित पारसियों को भारत के हिन्दू राजाओं ने ही शरण दिया। ऐसा इसलिए हुआ कि हिन्दू दूसरों की पांथिक भावनाओं, पूजा पद्धतियों से द्वेष नहीं रखता, बल्कि उनका भी सम्मान करता है।[६] जिस हिन्दू को आज साम्प्रदायिक कहा जा रहा है, इतिहास गवाह है कि वही हिन्दू राष्ट्रीय तथा वास्तव में धर्मनिरपेक्ष है। सनातनी, आर्यसमाजी, सिख, बौद्ध, जैन आदि विविध पंथ अथवा सम्प्रदाय हिन्दू धर्म की व्यापक परिधि में ही आते हैं। हिन्दू समाज ने कभी भी किसी अन्य मजहब अथवा पंथ की उपासना भूमि अथवा प्रतीक को ध्वंस अथवा अपवित्र नहीं किया।[७] हिन्दू न तो कभी साम्प्रदायिक था और न कभी होगा क्योंकि हिन्दू धर्म एवं सस्कृति के वैचारिक अधिष्ठान में साम्प्रदायिकता का कहीं कोई स्थान नहीं है।[८] भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या राजनीतिक स्वार्थों से पैदा हुई है। भारत के राजनीतिज्ञ इस सच से आँख मूँदे रहे हैं कि हिन्दू जहाँ भी अल्पमत हुआ, वह हिस्सा हिन्दुस्थान से अलग हुआ अथवा अलगाववादी आन्दोलन पैदा हुआ। भारत में लोकतंत्र तभी तक फल-फूल रहा है जब तक हिन्दू बहुमत में है।[८-क] वस्तुतः हिन्दू ही राष्ट्र है, हिन्दुत्व ही भारत की राष्ट्रीयता है। हिन्दू धर्म ही नहीं एक संस्कृति भी है। हिन्दुत्व दुनिया की सर्वश्रेष्ठ जीवन पद्धति है। हिन्दू राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का प्रतीक है।[९] हिन्दुत्व में ही पंथ निरपेक्षता निहित है। हिन्दुत्व एवं राष्ट्रीयता की वास्तविक अवधारणा को राजनीतिज्ञों ने भ्रमपूर्ण दुष्प्रचार से आच्छादित कर दिया है। पूजा पद्धति बदल लेने से किसी व्यक्ति या समाज के पूर्वज नहीं बदल जाते। भारत के धर्मान्तरित मुसलमानों के पूर्वजों और उनकी राष्ट्रीयता नहीं बदलती। इण्डोनेशिया और मलेशिया से भारतीय मुस्लिम समाज को प्रेरणा लेनी चाहिए। भारत के राजनीतिज्ञ भी यदि राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के प्रति वास्तव में समर्पित होते तो इण्डोनेशिया और मलेशिया के मुस्लिम समाज से सीख लेते हुए भारतीय मुसलमानों को मात्र वोट बैंक न मानकर उन्हें राष्ट्र की मूलधारा में समाहित करने का ईमानदारीपूर्वक प्रयास करते। वे इस तथ्य को स्वीकार करते कि उपर्युक्त दोनों देशों का मुस्लिम समाज अपने को श्रीराम का वंशज मानते हैं। इण्डोनेशिया की राजकन्या का नाम सरस्वती, शासकों के नाम सुहर्तो, सुकर्णों हैं। इन देशों में श्रीराम और उनका जीवन आदर्श माने गये हैं। यह भारत की विडम्बना है कि जो हिन्दुत्व को केन्द्र बनाकर सर्वपंथ समभाव के साथ राष्ट्रीय एकता-अखण्डता, समान नागरिक संहिता, जातीय एकता का प्रयास करते हैं उन्हें साम्प्रदायिक कहा जाता है और जो मजहबी उन्माद को प्रोत्साहित करते, तुष्टीकरण एवं वोट बैंक की राजनीति करते, जातीय संघर्ष का विष घोलकर राष्ट्र और समाज को तोड़ने में लगे हैं, उन्हें पंथ-निरपेक्ष (धर्मनिरपेक्ष) एवं सामाजिक न्याय का मसीहा कहा जाता है।[१०] सच का साक्षात्कार करने वाले सभी जानते हैं कि भारत की राष्ट्रीय एकता का मार्ग किसी भी दशा में हिन्दुत्व से होकर ही जाता है।[११] और एक समान नागरिक संहिता लागू किये बगैर बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक का झगड़ा समाप्त नहीं

हो सकता।[१२] तथाकथित सेकुलरवादियों की तुष्टीकरण के कारण भारत की राष्ट्रीयता कमजोर होती है और राष्ट्रीय स्वाभिमान आहत होता है। संसद में मात्र ३३ मुस्लिम सांसदों की आपत्ति के कारण राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' का गान रोक दिया गया।[१३] महन्त जी ने राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में बोलते हुए दो टूक शब्दों में कहा था-''देश में एक समान नागरिक संहिता लागू करना अनिवार्य है। मुस्लिम तुष्टीकरण के दोहरे मापदण्ड जैसी भारत सरकार की नीतियाँ सर्वथा अनुचित और राष्ट्रीय एकता के लिए घातक हैं। हम यह नहीं कहते कि भारत में रह रहे मुसलमानों को पाकिस्तान जाना चाहिए किन्तु भारत में रहकर उन्हें भारत राष्ट्र की मुख्य धारा का हिस्सा तो बनना ही पड़ेगा।[१४] महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज विनायक दामोदर सावरकर एवं अपने गुरुदेव महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के इस विचार के प्रबल समर्थक हैं कि हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयता है। उनके सुदीर्घ जीवन के वैचारिक अभियानों पर विहंगम दृष्टि डालने पर यह बात स्वतः प्रमाणित हो जाती है। वे धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण मानते हैं। उन्होंने एक दैनिक समाचार पत्र के वरिष्ठ पत्रकार से बातचीत करते हुए कहा कि भारत में लोकतन्त्र तभी तक कायम है जब तक हिन्दू बहुमत में है। धर्मान्तरण का मुद्दा राष्ट्रीय अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। धर्मान्तरण का मतलब मात्र पूजा पद्धति में परिवर्तन नहीं अपितु इसका अर्थ है-राष्ट्रान्तरण।[१५]

सामाजिक समरसता के अग्रदूत :

गोरक्षपीठ हिन्दू समाज की विकृतियों के खिलाफ जन-जागरूकता एवं हिन्द समाज को सामाजिक-राजनीतिक-आध्यात्मिक नेतृत्व देने के लिए ही सदा से प्रतिष्ठित रहा है। नाथपंथ का अभ्युदय ही हिन्दू तंत्र-साधना में पंचमकार के शमन के साथ दिखाई देता है। तथापि बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्व में गोरक्षपीठ ने सामाजिक परिवर्तन की जो मशाल प्रज्वलित की वह महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा देश भर में चलाये गये छुआछूत विरोधी अभियानों से वह पूर्णतः देदीप्यमान हो गयी। हम लोग पूज्य महन्त जी को १९८७ ई. से लगातार सुनते आ रहे हैं। कोई मंच हो, कोई विषय हो; किन्तु महाराज जी के उद्बोधन में हिन्दू समाज की एकता और छुआछूत समाप्त करने की अपील किसी न किसी रूप में आ ही जाती है। यद्यपि कि महन्त जी द्वारा छुआछूत विरोधी एवं हिन्दू समाज में सामाजिक समरसता का प्रयास तो गोरक्षपीठ से प्राप्त वैचारिक उत्तराधिकार के रूप में प्रारम्भ से ही चलता रहा, किन्तु १९८०-८१ ई. में मीनाक्षीपुरम् और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कराये गये धर्म परिवर्तन ने महाराज जी को अन्दर से हिला दिया। वे व्यथित हुए और मात्र दुःखी होकर पीड़ा सहकर चुप बैठने के बजाय राजनीति से संन्यास लेकर हिन्दू समाज की एकता और सामाजिक समरसता के यज्ञाभियान पर निकल पड़े।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज को जिस राष्ट्र विरोधी एवं गैर संवैधानिक सामूहिक धर्मान्तरण ने विचलित कर दिया वह १९ फरवरी १९८० को घटित मीनाक्षीपुरम् की घटना है। मीनाक्षीपुरम् का नाम बदलकर 'रहमत नगर' कर दिया गया। बड़े धूम-धाम से आयोजित इस धर्मान्तरण समारोह में आसपास के तेनाक्षी, कडयनल्लुर, वदकरी व वनगरम् आदि गाँवों के मुसलमान अपने-अपने परिवारों के साथ सम्मिलित हुए। कडयनल्लुर के

विधायक श्री सहुल हमीद ने भी सक्रिय भागीदारी निभायी। इस समारोह में एक सौ अस्सी हिन्दू परिवारों (हरिजन) को धर्मान्तरित कर उस दिन एक बजे, साढ़े चार बजे, साढ़े छः बजे जुहर, अझर एवं मकुआरिब हुआ और साथ ही सारा समुदाय कलमा पढ़ता रहा।

मीनाक्षीपुरम् के धर्मान्तण समारोह से प्रारम्भ यह धर्मान्तरण अभियान आसपास के क्षेत्रों में लगभग एक वर्ष तक चलता रहा किन्तु मीनाक्षीपुरम् धर्मान्तरण का पूरे देश में विरोध शुरू हो गया। पूज्य महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने धर्मान्तरण के विरोध में अत्यन्त कठोर शब्दों में अपनी आपत्ति दर्ज कराते हुए दुहराया कि यह धर्मान्तरण नहीं राष्ट्रान्तरण के अभियान की शुरुआत है। किन्तु महन्त जी मात्र अपनी आपत्ति दर्ज कराकर चुप नहीं हुए। वे कहते हैं कि -''मुझे यह लगा कि उस मूल कारण पर चोट होनी चाहिए कि जिससे हमारे ही बन्धु-बान्धव हजारों वर्षों की अपनी परम्परा, धर्म और उपासना पद्धति बदलने के लिए तैयार हो जा रहे हैं और मैंने महसूस किया कि जब तक हिन्दू समाज में अस्पृश्यता का कोढ़ बना रहेगा, अपने ही समाज में उपेक्षित और तिरस्कृत बन्धुओं को कोई भी गुमराह कर धर्मान्तरण हेतु प्रोत्साहित और प्रेरित कर सकता है। अतः मैं गाँव-गाँव जाकर छुआछूत के विरुद्ध अभियान छेड़ने का निश्चय लेकर निकल पड़ा। इसी समय मेरे मन में यह बात आयी कि मेरे इस सामाजिक समरसता अभियान पर लोग यह न सोचें कि यह साधु वोट के लिए ऐसा कर रहा है, मैंने राजनीति को तिलांजलि दे दी और चुनाव न लड़ने का निर्णय घोषित कर दिया।''

१९८० से गाँवों में लगातार महन्त जी के जनसम्पर्क एवं तथाकथित अछूतों के साथ बैठकर सहभोज ने क्रान्ति पैदा कर दी और सामाजिक परिवर्तन की आँधी में जिस तेजी से समाज बदला वह सभी ने देखा। इस दृष्टि से काशी में डोमराजा के घर पर महन्त जी की अगुवाई में धर्माचार्यों द्वारा किये गये भोजन का देश भर में स्वागत हुआ। दैनिक समाचार पत्र 'आज' ने लिखा-सदियों से बिखरी पड़ी हिन्दू एकता की सभी कड़ियों को परस्पर मजबूती से जोड़कर सशक्त हिन्दू समाज का पुनर्निर्माण करने के उद्देश्य से छुआछूत मिटाने के प्रयासों को ठोस आधार प्रदान करते हुए गोरक्षपीठाधीश्वर तथा सांसद महन्त अवेद्यनाथ ने अनेक प्रमुख सन्त महात्माओं के साथ गुरुवार (१८ मार्च १९९४) को प्रातःकाल काशी के डोमराजा सुजीत चौधरी के घर उनकी माँ के हाथों भोजन कर अस्पृश्यता की धारणा पर जोरदार चोट की। मान मन्दिर स्थित डोमराजा के आवास पर उनके वंशज श्री संजीत चौधरी की देखरेख में सूर्योदय के पूर्व से संतों के स्वागत तथा उन्हें भोजन कराने की तैयारियाँ शुरू हो गयी थीं। आसपास के लोगों ने जब यह सुना कि कुछ ही देर बाद अनेक संत-महात्मा डोमराजा के यहाँ भोजन करने आ रहे हैं तो किसी को विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन नौ बजे के लगभग जब दशाश्वमेध घाट से डोमराजा के आवास की ओर जाने वाली गली में गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में धर्माचार्यों के काफिले ने प्रवेश किया तो सभी नागरिक अभिभूत हो उठे। सदियों तक चाण्डाल कहकर पुकारे गये, समाज की मुख्य धारा से अलग अस्पृश्य माने गये इस परिवार के यहाँ देश के वरिष्ठ सन्तों के भोजन का यह दृश्य देखने जनता उमड़ पड़ी। अस्पृश्यता की जड़ अवधारणा पर निर्णायक प्रहार का ऐसा मार्मिक दृश्य देखकर

लोगों के नेत्र आनन्दातिरेक से छलछला उठे। संजीत चौधरी की माँ श्रीमती सारंग देवी भोजन कराते-कराते इस कदर भाव-विह्वल हो गयी थीं कि उनकी आँखों से झर-झर अश्रुपात होने लगा। एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि आप क्यों रो रही हैं? उनका उत्तर था-'आज संजीत क बाऊ होतन तऽ केतना खुश होतन।' भोजन के बाद परम्परानुसार संजीत चौधरी की माँ ने संतों को दक्षिणा देने का प्रयास किया तो महन्त अवेद्यनाथ ने उन्हें रोका और फिर सन्तों से उन्होंने कहा कि कोई दक्षिणा नहीं लेगा अन्यथा कल ही अखबार वाले छाप देंगे ये सन्त-महात्मा दक्षिणा के लिए ही भोजन करने आये थे। भोजनोपरान्त महन्त अवेद्यनाथ ने डोमराजा के घर में बने रामजानकी मन्दिर के समक्ष सिर नवाया। अन्य सन्तों ने भी उनका अनुकरण किया। बाद में जब एक पत्रकार ने महन्त अवेद्यनाथ से पूछा कि डोमराजा के घर भोजन कर आपको कैसा लगा? उनका उत्तर था- ''गंगा के तट पर डोमराजा के घर भोजन कर मैं धन्य हुआ हूँ। क्योंकि सदियों से भारतीय समाज में कोढ़ की तरह जड़ हो चुके छुआछूत को मेरे साथ देश के धर्माचार्यों ने एक बार फिर शास्त्र विरुद्ध घोषित कर हिन्दू समाज की एकता का मार्ग प्रशस्त किया है।[१५-क] महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा चलाये गये सामाजिक समरसता के अभियान का यह चरमोत्कर्ष था।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इससे पूर्व श्रीरामजन्मभूमि पर बनने वाले भव्यतम मन्दिर का शिलान्यास हिन्दू समाज में घोषित किसी अछूत से कराने का प्रस्ताव कर दुनिया को यह संदेश दे दिया कि हिन्दू धर्माचार्य और हिन्दू समाज अपनी सामाजिक विकृतियों को समाप्त करने हेतु संकल्पबद्ध हो रहा है। परिणामतः दुनिया ने देखा कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि पर बनने वाले पवित्र एवं विशाल मन्दिर की पहली ईंट एक दलित ने रखी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रयास से श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर का शिलान्यास लाखों श्रीराम भक्त हिन्दू जनता तथा परम्परा और रूढ़ियों को ताड़ने हेतु कृत संकल्पित भारत के विभिन्न हिस्सों से आये विविध पंथों के संत-महात्माओं की उपस्थिति में एक तथाकथित अस्पृश्य द्वारा किया जाना भारत के सामाजिक धार्मिक इतिहास में सामाजिक परिवर्तन की क्रान्ति का सूत्रपात था। श्रीरामजन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण का प्रश्न हिन्दू समाज और भारतीयता की प्रतिष्ठा का प्रश्न था ही, इस मुद्दे ने भारत की राजनीतिक सत्ता के उथल-पुथल का जो दृश्य प्रस्तुत किया उस पर सारी दुनिया की निगाहें टिकी थीं। ऐसे महत्त्वपूर्ण आयोजन पर हिन्दू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता जैसे कोढ़ के खिलाफ यह प्रतीकात्मक पहल दुनिया को संदेश देने के साथ-साथ हिन्दू समाज को यह संदेश देने का माध्यम बना कि छुआछूत न तो शास्त्र-सम्मत है, न ही धर्म सम्मत। यह एक विकृति है, रूढ़ि है जिसे धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं एवं हिन्दू समाज ने पूर्णतः खारिज कर दिया है।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा सामाजिक समरसता हेतु किये गये भगीरथ प्रयासों का संकलन और उनका उल्लेख तो सम्भव नहीं है किन्तु पटना के महावीर मन्दिर में दलित (हरिजन) पुजारी की प्रतिष्ठा के प्रयास का इतिहास में हमेशा उल्लेख किया जाता रहेगा। बिहार जब जातिवादी-साम्प्रदायिक राजनीति के सर्वोच्च शिखर पर था; श्री लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व में सत्ता पर काबिज रहने के लिए जातिवाद के विषवेलि को पूर्णतः

खाद-पानी प्राप्त हो रहा था; बिहार एक प्रकार से जल रहा था, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इस जातिवादी राजनीति के सीने पर चढ़कर बिहार की राजधानी पटना में स्थित महावीर मन्दिर में सूर्यवंशी लाल उर्फ फलाहारी बाबा (हरिजन) को पुजारी नियुक्त कर एक बार फिर भारत की सामाजिक विखण्डनकारी राजनीति को आईना दिखा दिया। समारोह के साथ पुजारी नियुक्त किया गया। इस समारोह में महन्त जी के साथ स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज भी उपस्थित हुए। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के इस युग-परिवर्तनकारी प्रयास को दुनिया भर में सराहा गया।[९६]

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने पटना से लौटकर गोरखपुर में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा था- किसी मन्दिर का पुजारी होने के लिए किसी 'जाति' का होना आवश्यक नहीं है। किसी भी जाति का सद्चरित्र, गुणवान, ज्ञानी, ईश्वर-भक्त व्यक्ति मन्दिर का पुजारी बन सकता है। सन्त रविदास तो हरिजन ही थे जिन्हें मीराबाई ने अपना गुरु बनाया था। सामाजिक नियम देश, काल और युगानुसार बदलते रहते हैं। जिस समाज में युगानुकूल सामाजिक-धार्मिक नियम परिवर्तित नहीं किये जायेंगे वह समाज जड़ हो जायेगा। फलाहारी बाबा की पुजारी के रूप में नियुक्ति कोई नया कार्य नहीं, ऐसा हिन्दू समाज में होता रहा है। आज के तथाकथित अस्पृश्यों की जाति में जन्मे ऋषियों, सन्तों, महापुरुषों की एक लम्बी शृंखला हिन्दू समाज में देखी जा सकती है।

उपर्युक्त तीन उदाहरण महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा छुआछूत विरोधी जन-जागरण और उनके प्रयासों की सफलता के प्रतीक हैं। अस्सी के दशक में जब महन्त जी ने अस्पृश्यता विरोधी अभियान छेड़ा, तब भारतीय समाज में जातिव्यवस्था, ऊँच-नीच और छुआछूत की भावना समाज में अटल चट्टान की भाँति जड़ हो चुकी थीं। कोई धर्मात्मा किसी तथाकथित अछूत के हाथ का छुआ पानी पियेगा यह कल्पना नहीं की जा सकती थी। महन्त जी ने समाज की परवाह किये बगैर राजनीति और गोरक्षपीठ की सुख-सुविधाओं को ठोकर मारकर गाँव के दलितों-अछूतों को गले लगाने चल पड़े थे। समाज में व्याप्त छुआछूत की कुरीति को उखाड़ फेंकने का संकल्प लेकर निकले इस महात्मा के साथ कदम से कदम जुड़ते गये और फिर क्या था, कारवाँ चल पड़ा, देशभर के धर्माचार्यों के बीच जाकर महन्त जी ने उन्हें हिन्दू समाज की कुरीतियों के खिलाफ आगे आने की अपील की, जिसका धीरे-धीरे चमत्कारी असर हुआ। देश भर के धर्माचार्य इस अभियान में महन्त जी के साथ हो लिये। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज १९८४ तक आते-आते ही हिन्दू धर्म के सभी पंथ-सम्प्रदाय के सन्त महात्माओं के सर्वमान्य हो चुके थे। कुछ सभाओं, सम्मेलनों में महन्त जी के उद्घोष, उनके सामाजिक समरसता अभियान के प्रति उनके सम्पूर्ण समर्पण के ही प्रमाण हैं।

उन्होंने कहा था-आज राष्ट्र की एकता, अखण्डता और प्रभुसत्ता खतरे में हैं। इसलिये गुफाओं की साधना और मठ-मन्दिरों की आराधना छोड़कर धर्माचार्य देश को दिशा देने के लिए प्रस्थान कर चुके हैं। राष्ट्र की एकता-अखण्डता की गारन्टी हिन्दू समाज की एकता-अखण्डता में ही सन्निहित है। अतः हिन्दू समाज को जगना होगा। छुआछूत हिन्दू समाज का कोढ़ है, महामारी है, जीवित भूत है। हिन्दू समाज का दलित हमारा भाई है,

उन्हें प्यार देना होगा, सम्मान देना होगा, उन्हें बेरोक-टोक मन्दिरों में पूजा पाठ करने की खुली छूट देनी होगी। देश की तमाम पिछड़ी जातियों के उत्थान हेतु हमें मिलकर ईमानदारी से प्रयास करना होगा। हिन्दू समाज को देश की खातिर जात-पाँत से ऊपर उठना होगा।[१७] हरिजन, वनवासी, पिछड़े सभी हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हैं। इनके बीच भेदभाव नाजायज है।[१८] सन्त समाज के किसी भी आचार्य ने जन्म के आधार पर कभी भी छुआछूत को मान्यता नहीं दी। हिन्दू समाज के मार्गदर्शक सन्तों ने कबीर-रैदास जैसे जाने कितने को न केवल अपना शिष्य बनाया बल्कि कितनों ने उन्हें अपना गुरु मान लिया। महन्त जी ने यहाँ तक कहा कि हिन्दू समाज की एकता के लिए यदि अपने ही बन्धु-बान्धव हरिजनों के सामने झुकना भी पड़े तो हमे हिचक नहीं।[१९] हिन्दू समाज में ऊँच-नीच, छुआछूत की भावना जब तक समाप्त नहीं होगी, हिन्दू समाज पर अन्यों का अत्याचार बन्द नहीं होगा। यहाँ तक कि हिन्दुत्व जिन्दा नहीं रहेगा यदि हम हिन्दू समाज में व्याप्त रूढ़िगत परम्पराओं एवं कुरीतियों को त्याग नहीं देते। जात-पाँत के भेदभाव और छुआछूत जैसी विकृतियाँ हिन्दू समाज को तोड़ देंगी।[२०]

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने २६ अप्रैल १९९२ को गोरखपुर महानगर के मानसरोवर स्थित रामलीला मैदान में बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति का अनावरण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बाबा साहेब किसी दल, सम्प्रदाय या जाति के नहीं राष्ट्र की थाती हैं। वे सच्चे अर्थों में राष्ट्र पुरुष हैं। बाबा साहेब के समय में हिन्दू समाज जाति व्यवस्था की बेड़ियों में बुरी तरह जकड़ा हुआ था। छुआछूत एवं भेदभाव की भावना इस कदर हावी थी कि तथाकथित शूद्रों का समाज में चलना तक दूभर था। इन सारी स्थितियों को बाबा साहेब ने स्वयं झेला, हिन्दू समाज के लोगों द्वारा ही तमाम तरह के अपमान सहे, फिर भी तमाम प्रलोभनों के बावजूद इस्लाम और ईसाई पंथ स्वीकार नहीं किया तथा हिन्दू समाज के ही महत्त्वपूर्ण पंथ बौद्ध मत के अनुयायी बने। वस्तुतः बाबा साहेब एक आदर्श प्रतिमान हैं हिन्दू समाज के लिए।[२१]

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने हिन्दू समाज को चेतावनी देते हुए हाटा (देवरिया) की जनसभा में कहा था कि यदि हम अपनी कुरीतियों से मुक्त नहीं हुए तथा जात-पाँत में बँटे रहे, छुआछूत के कोढ़ से मुक्त नहीं हुए तो हिन्दुत्व और हिन्दू समाज की रक्षा कोई नहीं कर सकता। होटलों में खाते-पीते समय तो हम नहीं पूछते कि हमारे बगल में खा-पी रहा व्यक्ति किस जाति का है किन्तु घर पर अपने द्वारा घोषित अछूत के साथ चाय पी लेने से धर्म क्यों चला जाता है? जिनका धर्म इतना कमजोर है कि अपने ही बन्धु-बान्धवों के साथ उठने-बैठने, खाने-पीने से समाप्त हो जाय, वे हिन्दुत्व की रक्षा क्या करेंगे? ऐसे आत्मघोषित श्रेष्ठता के पक्षधारों ने यदि अपना आचरण नहीं बदला तो न हिन्दू बचेगा, न उनकी जाति बचेगी और न फिर भारत बचेगा।[२२] १ मई १९९४ को सोलन (पंजाब) में हिमगिरि कल्याण आश्रम के नवें वार्षिक समारोह को सम्बोधित करते हुए अवेद्यनाथ जी महाराज ने फिर दोहराया कि यदि भारत में भी हिन्दू अल्पमत हो गया तो दुनिया में कोई ऐसा राष्ट्र नहीं बचा है जहाँ वे अपनी सभ्यता और संस्कृति को लेकर जा सकेंगे तथा उनकी रक्षा हो सकेगी। यदि हिन्दू समाज अपना खोया सम्मान पाना चाहता है तो वह संकीर्ण मानसिकता का त्याग करे, काल-परिस्थितिवश

आयी अपने राष्ट्र एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों का शमन करे तथा हिन्दुत्व की व्यापकता को आचरण में भी स्वीकार करे। यदि हम अपने ही समाज के एक वर्ग को बराबरी की जगह नहीं देते, उस समूह के साथ भाई जैसा व्यवहार नहीं करते तो स्वाभाविक प्रश्न है कि वे ऐसे समाज में क्यों रहेंगे।[२३] २५ सितम्बर १९९४ को दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती पर आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में महन्त जी ने कहा कि अस्पृश्यता के खिलाफ सम्पूर्ण हिन्दू समाज की बगावत ही हिन्दुत्व की रक्षा की गारंटी है।[२४]

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सामाजिक समरसता के प्रश्न पर सदैव स्पष्टवादी रहे। उन्होंने इस प्रश्न पर धर्माचार्यों, संत-महात्माओं, राजनीतिज्ञों, किसी को भी क्षमा नहीं किया, यदि वे हिन्दू समाज की एकता के विरुद्ध अथवा अस्पृश्यता के पक्ष में खड़े हुए। भारतीय जनता पार्टी को चेतावनी देते हुए कानपुर में उन्होंने कहा था कि भाजपा ने 'रामनाम' को तो महत्त्व दिया परन्तु श्रीराम के आदर्शों को भाजपा नेता अपने जीवन में नहीं उतार पाये। यदि उनके जीवन में श्रीराम के आदर्श दिखते तो हिन्दू समाज का अभिन्न हिस्सा दलित वर्ग भाजपा से दूर नहीं हुआ होता। उन्होंने आगे कहा कि छुआछूत की वकालत करने वाले धर्माचार्य हिन्दुत्व के सबसे बड़े शत्रु हैं। भला मानव के स्पर्श से वह भगवान् अपवित्र हो सकते हैं, जो घर-घर में व्याप्त हैं, सभी जीव-जन्तुओं अर्थात् पशु-पक्षियों तक में जिनके दर्शन किये जा सकते हैं। हमारे ऐसे भगवान् को अपने ही समाज के अपने भक्त बन्धुओं द्वारा छूने से अपवित्र मानने वाले ढोंगी हैं, अज्ञानी हैं और आत्महन्ता हैं। धर्म तभी जीवित और शाश्वत रहता है जब उसमें समय-समय पर व्याप्त रूढ़ियों का शमन किया जाता रहे।[२५] उत्तर प्रदेश में सत्ता की बागडोर जब बसपा प्रमुख सुश्री मायावती ने संभाली तो गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त जी ने उन्हें अपनी शुभकामना देते हुए कहा था कि उत्तर प्रदेश की पहली महिला दलित मुख्यमंत्री के रूप में सुश्री मायावती को सदन में विश्वास मत प्राप्त होना सामाजिक न्याय एवं समरसता की जीत है। महन्त जी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए चेतावनी के साथ आगे कहा कि बहुजन से सर्वजन हिताय की घोषणा के बाद सुश्री मायावती मुख्यमंत्री तभी बन पायीं अतः उन्होंने अलगाववादी भाषा छोड़ राष्ट्रीय एकता-अखण्डता और समरसता की भाषा बोलना शुरू कर दिया। हमारी शुभकामना है कि उनका राजनीतिक जीवन सामाजिक न्याय और सामाजिक समरसता की स्थापना की दृष्टि से एक मिसाल बने। ३ नवम्बर १९९९ को 'दैनिक जागरण' के साथ एक विशेष बातचीत में महन्त जी ने कहा कि-हिन्दू समाज के सबसे बड़े दुश्मन जाति का जहर फैलाने वाले जातिवादी नेता हैं। हिन्दू समाज भी अपने पतन के लिए कम दोषी नहीं है। हम अपने ही बन्धु-बान्धवों को अछूत घोषित कर उनकी उपेक्षा करते हैं; ऐसा समाज कमजोर होगा ही विदेशी षड्यन्त्रों का शिकार भी होगा।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज एकबार अपने प्रिय एवं पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द जी सरस्वती के खिलाफ भी तब तनकर खड़े हो गये जब उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित समारोह में एक विदुषी महिला को वेदपाठ करने पर रोक दिया। महन्त जी ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह कृत्य कहीं से भी न तो न्यायसंगत है और न ही धर्मानुसार उचित है। यह कृत्य

महिला समाज का अपमान करता ही है इससे हिन्दुत्व भी लांछित होता है। कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसे कृत्य का समर्थन नहीं कर सकता। आज जबकि जातिवाद, ऊँच-नीच, छूत-अछूत आदि विकृतियों को शह देकर हिन्दू समाज को बाँटने एवं कमजोर करने का षड्यन्त्र चल रहा है, जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा महिलाओं के वेदपाठ पर आपत्ति न तो धर्मानुकूल है और न ही युगानुकूल।[२६] महन्त जी से जब इस घटना का जिक्र किया तो उनके चेहरे पर दुःख के उभरे सहज भाव को कोई भी पढ़ सकता था। वे आहत मन से बोल पड़े- ''हिन्दू जीवन पद्धति दुनिया की श्रेष्ठतम जीवन पद्धति है। हमारे ऋषियों-महर्षियों ने अनेक पीढ़ियों की तपस्या से मानवता को सुख और शान्ति प्रदान करने वाली संस्कृति का विकास किया; मनुष्य की कौन कहे इस सृष्टि के चर-अचर सभी में ईश्वर का दर्शन किया और इसका उपदेश किया। ऐसे श्रेष्ठतम संस्कृति के वाहक जब छूत-अछूत, उँच-नीच की बात करें, पुरुष-महिला विभेद की बात करें तो यह हास्यास्पद लगता है। महिलाओं के वेदपाठ पर आपत्ति कैसे की जा सकती है, जबकि अनेक वैदिक ऋचाओं की रचना विदुषी महिलाओं ने ही की है। भारत में नारियाँ पुरुषों के समकक्ष ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों में अग्रणी थीं और उन्हें समाज में आदर की दृष्टि से देखा जाता था। भारतीय धर्मशास्त्र में नारी सर्व-शक्ति-सम्पन्न मानी गयी तथा विद्या, शील, ममता, यश और सम्पत्ति की प्रतीक समझी गई। जिस समाज में अर्द्धनारीश्वर के रूप में भगवान् की उपासना होती हो, जहाँ भगवान राम के पहले भगवती सीता का नाम जुड़ा हो, जहाँ महेश्वर श्री उमापति कहे जायँ, जहाँ कृष्ण राधा के बिना अधूरे हों, ऐसे स्त्री-पुरुष के एकात्म समाज में नारियों के वेद-पाठ पर आपत्ति हास्यास्पद कृत्य नहीं तो और क्या है! ऐसे समाज में स्त्रियों को पुरुष से हीन समझना किस दृष्टि से धर्मसम्मत कहा जायेगा? रोमशा, अपाला, उर्वशी, विश्ववारा, सिकता, निबावरी, घोषा, लोपामुद्रा जैसी विदुषी भारतीय नारियाँ किस पुरुष विद्वान से कमतर थीं? श्रीराम के युवराज पद पर अभिषेक के समय कौशल्या ने यज्ञ किया था। ऋषि कुशध्वज की कन्या वेदवती, दर्शन, तर्क, मीमांसा की पंडित थी। काशकृत्स्नी ने मीमांसा जैसे किलष्ट और गूढ़ विषय पर पुस्तक का प्रणयन किया था जो पुस्तक बाद में उसी के नाम पर प्रसिद्ध हुई और उसके अध्येता 'काशकृत्स्नी' ही कहे गये। याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी को कौन नहीं जानता कि वह एक प्रतिष्ठित दार्शनिक थीं। याज्ञवल्क्य जैसे महर्षि को स्तब्ध कर देने वाली जगत्-प्रसिद्ध विदुषी गार्गी को भारतीय समाज में ही वह प्रतिष्ठा प्राप्त थी। वाल्मीकि और अगस्त्य जैसे महर्षियों ने मैत्रेयी को वेदान्त की शिक्षा दी थी। भगवती सीता नित्य वैदिक प्रार्थनाएँ किया करती थीं। भारत में नारियाँ ज्ञान-विज्ञान तथा शासन-प्रशासन में सहभागी थीं तो सहधर्मचरी भी थीं। ऐसे हिन्दू समाज में नारी-पुरुष की विषमता को यदि जगह मिली है तो वह काल और परिस्थिति के अनुसार ग्राह्य रूढ़ि है और अब वह विकृति है जिसका मूलोच्छेदन करना धर्माचार्यों का भी प्रमुख धर्म है।

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपने जीवन का उत्तरार्द्ध पूर्णतः सामाजिक समरसता, हिन्दू समाज के पुनर्जागरण और श्रीरामजन्म भूमि मुक्ति अभियान को समर्पित कर दिया। उन्होंने १९८० के बाद से ही हिन्दू समाज से अस्पृश्यता उन्मूलन एवं श्रीरामजन्म भूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण को अपने जीवन का

मिशन बना लिया और अब तक सोते-जागते, उठते-बैठते महाराज जी के बातचीत के केन्द्र बिन्दु यही दो मुद्दे होते हैं।

श्रीरामजन्म भूमि आन्दोलन के नायक :

आधुनिक भारत में क्षेत्र और जनसहभागिता के आधार पर १८५७ और आपातकाल के विरुद्ध हुए जनान्दोलनों से भी बड़ा या यह कहें कि अब तक के सबसे बड़े उस जनान्दोलन का, जिसने भारत की दिशा बदल दी, नेतृत्व गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने ही किया। पांथिक विविधता और मतवैभिन्नता से युक्त हिन्दू समाज के धर्माचार्यों में जिस एक नाम पर सहमति थी वह गोरक्षपीठाधीश्वर का ही नाम था। शैव, वैष्णव, शाक्त, बौद्ध, जैन, सिख, विविध अखाड़ों सहित बड़ी संख्या के मतावलम्बी धर्माचार्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रति समान श्रद्धा एवं निष्ठा रखते हैं। हिन्दू समाज में अस्पृश्यता एवं ऊँच-नीच जैसी कुप्रथाओं के खिलाफ देश भर में जन-जागरण अभियान पर निकलकर गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सर्वप्रथम धर्माचार्यों के बीच अपने-अपने मत-श्रेष्ठतावाद का खण्डन किया और भारत के लगभग सभी शैव-वैष्णव इत्यादि धर्माचार्यों को एक मंच पर खड़ा किया था। परिणामतः जब श्रीरामजन्म भूमि मुक्ति यज्ञ-समिति का गठन हुआ तो २१ जुलाई १९८४ को अयोध्या के वाल्मीकि भवन में सर्वसम्मति से महन्त जी को अध्यक्ष चुना गया। तब से अब तक श्रीरामजन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति के महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अध्यक्ष हैं और उनके नेतृत्व में भारत में ऐसे जनान्दोलन का उदय हुआ जिसने भारत में सामाजिक-राजनीतिक क्रान्ति का सूत्रपात किया। विकृत धर्मनिरपेक्षता एवं मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति का काला चेहरा उजागर हुआ। हिन्दुत्व पर नये सिरे से दुनियाभर में बहस शुरू हुई। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की आन्तरिक ताकत का एहसास हुआ। भारत सहित दुनिया के इतिहास में श्रीरामजन्म भूमि आन्दोलन और उसके प्रभाव एवं परिणाम का अध्याय महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का उल्लेख हुए बिना अधूरा रहेगा।

श्रीरामजन्म भूमि की मुक्ति और उस स्थान पर भव्य मन्दिर निर्माण के लिए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में अत्यन्त योजनापूर्वक जनान्दोलन की रूपरेखा बनी और १९८४ से प्रारम्भ किये गये इस चरण का आन्दोलन एक हद तक परिणाम पर पहुँचा और उस स्थान पर स्थित विदेशी आक्रान्ता द्वारा निर्मित हिन्दू समाज को चिढ़ाने और अपमानित करने वाला 'ढाँचा' ध्वस्त कर दिया गया तथा श्रीरामजन्म भूमि पर कारसेवकों ने भगवान श्रीराम का 'मन्दिर' अपने हाथों से बना दिया। अब उस मन्दिर को 'भव्यतम' बनाने का कार्य ही मात्र शेष है। लगभग पाँच शताब्दियों से चल रहे संघर्ष को अन्ततः पूज्य महन्त जी के नेतृत्व में एक बड़ी सफलता प्राप्त हुई। महन्त जी ने १९८४ के बाद से श्रीरामजन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति द्वारा चलाये गये जन-संघर्ष का सफलतम नेतृत्व किया।

७ अक्टूबर १९८४ को भगवान श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में सरयू के तट पर श्रीरामजन्म भूमि को मुक्त कराने के पवित्र संकल्प के साथ प्रारम्भ 'धर्मयात्रा' १४ अक्टूबर को लखनऊ पहुँची जहाँ बेगम हजरत

महल पार्क में तब तक का ऐतिहासिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग दस लाख की संख्या में हिन्दू जनता ने हिस्सा लिया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सम्मेलन से सरकार हिल गई। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी से महन्त जी की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि-मण्डल ने भेंट की और उन्हें अपना माँग-पत्र सौंपा। जनसंघर्ष को निरन्तर दिशा देते और कुशल नेतृत्व देते हुए तीन-चार वर्षों में ही इसे राष्ट्रव्यापी बनाने में सफल हुए धर्माचार्यों के आह्वान पर २२ सितम्बर १९८९ को नई दिल्ली में वोट-क्लब पर विराट हिन्दू सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने की। इस विराट हिन्दू सम्मेलन में तीन प्रस्ताव पारित किये गये- १. श्रीरामजन्म भूमि हिन्दुओं का था, है, और रहेगा। २. श्रीरामजन्म भूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण हेतु ९ नवम्बर १९८९ को समारोहपूर्वक शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न होगा। ३. लोकसभा चुनाव में श्रीरामजन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण के समर्थक, चरित्रवान तथा योग्य प्रत्याशी को ही हिन्दू जनता मतदान करेगी। इस सम्मेलन में मुस्लिम समाज से अपील की गई की वे हिन्दुओं तीन प्रमुख तीर्थस्थल-अयोध्या, काशी, मथुरा-हिन्दू समाज को सौंप दें।[२७]

वोट क्लब की रैली से पूर्व ही २० सितम्बर को भारत सरकार के तत्कालीन गृहमंत्री श्री बूटा सिंह ने महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से बातचीत का आग्रह किया, किन्तु महन्त जी ने रैली के बाद ही बातचीत का निमन्त्रण स्वीकार करने का प्रस्ताव दिया। २५ सितम्बर को प्रातः ९ बजे मुलाकात की तिथि निर्धारित हुई। उक्त निर्धारित तिथि पर गृहमंत्री के साथ महन्त जी की घंटे भर वार्ता हुई। गृहमंत्री चाहते थे कि ९ नवम्बर १९८९ को सम्पन्न होने वाला श्रीरामजन्म भूमि पर विशाल मन्दिर के निर्माण का शिलान्यास कार्यक्रम स्थगित किया जाय। महन्त जी ने दृढ़तापूर्वक अपना पक्ष रखते हुए कहा कि यह फैसला करोड़ों हिन्दू समाज का है। महन्त जी द्वारा अपने निर्णय पर अडिग रहने के कारण पुनः लखनऊ में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी के साथ गृहमंत्री बूटा सिंह एवं महन्त जी का वार्ता तय हुई। मुख्यमंत्री आवास पर हुई इस बैठक में महन्त जी के साथ महन्त नृत्यगोपालदास, श्री दाउदयाल खन्ना एवं विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल भी शामिल हुए। इस बैठक में भी महन्त जी ने स्पष्ट किया कि यह मामला अदालत के अधिकार क्षेत्र के बाहर का है, यह राष्ट्रीय सम्मान एवं हिन्दू समाज की आस्था का प्रश्न है।[२८]

सरकार के समक्ष अपना स्पष्ट और दो टूक पक्ष रखने के पश्चात देश भर में शिलान्यास समारोह हेतु श्रीरामशिला पूजन अभियान प्रारम्भ हो गया। महन्त जी की अगुवाई में देश भर के गाँव-गाँव से श्रीरामशिला पूजन कर अयोध्या के लिए चल पड़ी। २९ सितम्बर को उत्तर प्रदेश में कुशीनगर जनपद के खड्डा में श्रीरामशिला पूजन समारोह के अवसर पर आयोजित विशाल हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा आज राष्ट्र की एकता-अखण्डता एवं प्रभुसत्ता खतरे में है। इसलिये गुफाओं की साधना और मठ-मन्दिरों की आराधना से बाहर निकलकर धर्माचार्य देश को दिशा देने के लिए प्रस्थान कर चुके हैं। हिन्दू समाज को जागना होगा। श्रीरामजन्म भूमि पर विदेशी आक्रान्ता द्वारा स्थापित गुलामी के प्रतीक एवं हमारी राष्ट्रीय सम्प्रभुता को

चुनौती देने वाले ढाँचे के स्थान पर भव्य मन्दिर के निर्माण के शिलान्यास समारोह को सम्पन्न कराने एवं उसका विरोध करने वाली सरकार तथा राजनीतिक दलों को सबक सिखाने हेतु राष्ट्रभक्त जनता भी घरों से बाहर निकले।[२६] महन्त जी ने श्रीरामशिला पूजन अभियान हेतु देशभर की दर्जनों जनसभाओं को सम्बोधित किया तथा उत्तर प्रदेश में जन-जागरण की अलख जगाने की बागडोर सीधे अपने हाथ में ले ली। इसी अभियान के दौरान लखनऊ में एक पत्रकार को दिये विशेष साक्षात्कार में महन्त जी ने कहा कि हिन्दुस्तान की एकता का पहला सूत्र हिन्दू समाज की एकता है। देश का बहुसंख्यक वर्ग यदि संगठित रहा तो साम्प्रदायिक और विघटनकारी तत्त्व राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को खतरा नहीं पैदा कर सकेंगे। हमारी निष्ठा राष्ट्र और भारत की संस्कृति में है।[३०]

इसी बीच लोकसभा चुनाव घोषित होने तथा देश भर के धर्माचार्यों के आग्रह पर महन्त जी ने गोरखपुर सदर लोकसभा से चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी। ६ नवम्बर को शिलान्यास समारोह की तैयारी और जनजागरूकता से घबड़ाई सरकार के प्रतिनिधि रूप में जिलाधिकारी गोरखपुर ने तत्कालीन मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी का महन्त जी को लखनऊ आने का आमंत्रण दिया। महन्त जी की स्वीकृति पर राज्य सरकार के विशेष विमान द्वारा ८ नवम्बर को प्रातः महन्त जी लखनऊ पहुँचे तथा मुख्यमंत्री से भेंट की। इस विशेष वार्ता के पश्चात महन्त जी को विशेष विमान द्वारा अयोध्या पहुँचा दिया गया।[३१] शंखनाद के साथ वैदिक रीति से मंत्रोच्चार एवं श्रीरामभक्तों के गगनभेदी जयघोष के बीच प्रस्तावित श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर का शिलान्यास समारोह प्रारम्भ हो गया। शुभ घड़ी के अनुसार १० नवम्बर को एक बजकर पैंतीस मिनट पर वर्तमान गर्भगृह से १६२ फीट दूर पूर्व निर्धारित स्थान पर हवन और भूमि पूजन के पश्चात गोरक्षपीठाधीश्वर ने सांकेतिक रूप से नींव खोदने के पश्चात शिलान्यास हेतु पहली शिला हिन्दू समाज में तथाकथित अछूत दक्षिणी बिहार के श्री कामेश्वर प्रसाद चौपाल (हरिजन) से रखवाकर एक और नये भविष्य की शुरुआत कर दी। महन्त जी का यह प्रयास भारत के सामाजिक परिवर्तन के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गया।[३२] शिलान्यास समारोह सम्पन्न होने के पश्चात दुनिया भर की जुटी मीडिया को सम्बोधित करते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा- यह श्रीराम मन्दिर का ही नहीं हिन्दू राष्ट्र के सिंहद्वार का शिलान्यास हुआ है, हिन्दू समाज की एकता का शिलान्यास हुआ है, सामाजिक समरसता की प्रतिष्ठा का शिलान्यास हुआ है।[३३]

श्रीरामजन्मभूमि के शिलान्यास समारोह के पश्चात महन्त अवेद्यनाथ महाराज गोरखपुर वापस आये और दस नवम्बर को ही रात्रि नौ बजे वे महाराणा प्रताप इन्टर कालेज के मैदान में आयोजित अपनी विशाल चुनावी सभा में उपस्थित हुए। यह वही समय था, जब १६८६ का लोकसभा चुनाव चल रहा था। महन्त जी की चुनावी सभा में राजमाता विजयाराजे सिन्धिया भी थीं। महन्त जी १६८६ का लोकसभा चुनाव श्रीरामजन्मभूमि के मुद्दे पर ही सन्तों-महात्माओं के प्रतिनिधि रूप में 'हिन्दू महासभा' से लड़ रहे थे। चुनावी सभा में रात्रि के सन्नाटे को महन्त जी की गर्जना तोड़ रही थी। वे कह रहे थे-मैं राजनीति से अलग हट चुका था। किन्तु आज

जब हिन्दू समाज के साथ अन्याय हो रहा है; राजनीतिज्ञ हिन्दू समाज को अपमानित कर रहे हैं, धर्मनिरपेक्षता का ढोंग करने वाली सरकारों के एक समान कानून बनाने के मुद्दे पर हाथ-पाँव फूलने लगते हैं। हमारी राष्ट्रीयता के प्रतीक मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण एवं भगवान् शंकर के जन्म स्थानों पर विदेशी आक्रान्ताओं के ध्वंसावशेष हमें मुँह चिढ़ा रहे हैं; हमें अपमानित कर रहे हैं, उनका भी जीर्णोद्धार हम नहीं कर सकते। हिन्दू, हिन्दुस्थान में ही सम्मान से नहीं जी सकता और 'वोट बैंक की राजनीति' तथा चुनावी जीत-हार की गणित में सच बोलने का साहस राजनीतिज्ञ नहीं कर पा रहे, तो चुनावी समर में उतरना हमारी मजबूरी है। हिन्दू समाज अपमान का घूँट अब और नहीं पी सकता।[३४]

१४ नवम्बर १९८९ को महन्त जी ने एक विशेष साक्षात्कार में कहा कि कौरव सभा में जब द्रोपदी का चीर हरण हो रहा था, तब वहाँ एक से एक बड़े योद्धा और धर्मवेत्ता मौन थे। ठीक ऐसी ही दशा संसद की तब होती है जब संसद में श्रीरामजन्मभूमि का मुद्दा बहस हेतु उठ जाता है। उत्तर प्रदेश विधान सभा की ऐसी ही स्थिति तब हुई जब उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाये जाने का विधेयक प्रस्तुत किया गया। जब भी संसद या विधानसभा में हिन्दू समाज से सम्बन्धित कोई सकारात्मक मुद्दा उठता है तो हमारे जनप्रतिनिधियों की स्थिति कौरव सभा में द्रोपदी चीर हरण के समय उपस्थित महारथियों एवं धर्मवेत्ताओं जैसी हो जाती है। भारतीय संस्कृति के प्रतीक मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण हेतु बोलने वाला भारतीय संसद में एक भी सांसद नहीं था। सभी राजनीतिक दलों के अल्पसंख्यक प्रतिनिधि तथाकथित बाबरी मस्जिद के दावे पेश कर रहे थे वहीं हिन्दू समाज के प्रतिनिधि खामोश थे। भारतीय संसद में इसी एकतरफा कार्रवाई तथा भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्रीय मानबिन्दुओं के चीर-हरण पर बहुसंख्यक जनप्रतिनिधियों के मौन ने मुझे एक बार फिर मठ से बाहर राजनीति की धरती पर पैर रखने को बाध्य कर दिया। मैं साधु रूप में हिन्दू समाज का प्रहरी हूँ। ऐसे में हिन्दू समाज पर आने वाले संकट को ललकारने के अलावा मेरे पास और कोई विकल्प नहीं था। यदि भारत की संसद में हिन्दू समाज के साथ न्याय के पक्ष में हक अदा करते हुए सांसद दिखाई देते तो मुझे राजनीति में उतरने की क्या जरूरत थी?[३५]

श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन को आगे बढ़ाते हुए महन्त जी के नेतृत्व में २६ जनवरी १९९० को प्रयाग में सन्त सम्मेलन तय किया गया। महन्त जी ने १२ दिसम्बर १९८९ को दिल्ली में कहा कि सरकार सन्त सम्मेलन से पूर्व श्रीरामजन्मभूमि स्थान हमें सौंपे।[३६] सरकार की ओर से कोई पहल न होने पर २६ जनवरी को प्रयाग में महन्त जी की अध्यक्षता में आयोजित सन्त सम्मेलन में १४ जनवरी से श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण कार्य प्रारम्भ करने का संकल्प लिया गया।[३७]

९ फरवरी को दिल्ली में श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति एवं विश्व हिन्दू परिषद् की ग्यारह सदस्यीय उच्चाधिकार प्राप्त समिति की बैठक महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक के पश्चात महन्त जी ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि - प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कल अपील की थी कि चार

माह के अन्दर श्रीरामजन्मभूमि विवाद का स्थायी समाधान कर दिया जायेगा। उन्होंने चार माह तक मन्दिर निर्माण की तिथि टाल दिये जाने का भी अनुरोध किया है। हमने उनकी इस अपील को स्वीकार करते हुए मन्दिर निर्माण का कार्य चार माह के लिए स्थगित कर दिया है।[३८] महन्त जी की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में लिये गये उपर्युक्त निर्णय पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए पूर्व सांसद एवं माइनॉरिटीज वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष श्री अशफाक हुसेन ने कहा कि श्रीरामजन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष एवं सांसद महन्त अवेद्यनाथ जी ने श्रीराममन्दिर के निर्माण कार्य को चार महीने तक स्थगित कर अपनी दूर दृष्टि एवं देशभक्ति का प्रमाण दे दिया है।[३९]

किन्तु भारत सरकार अपने द्वारा मांगे गये चार माह में श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण की दिशा में समाधान निकालने की दिशा में एक कदम भी नहीं चल पायी और ६ जून को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में सन्त-महात्माओं का एक प्रतिनिधिमण्डल प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से मिला। डेढ़ घंटे की वार्ता के पश्चात जब महन्त जी बाहर आये तो संवाददाताओं के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा - प्रधानमंत्री जी की अपील पर हमने चार माह का समय सरकार को इसीलिए दिया था कि लोग हमें दुराग्रही न समझें।... पर इस चार महीने में कुछ भी नहीं हुआ। यहाँ तक कि प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव के बीच अब तक बात नहीं हो पायी। अतः अब दो बातों पर कोई समझौता नहीं हो सकता, एक-२३-२४ जून को हरिद्वार के सन्त सम्मेलन में मन्दिर निर्माण की जो तिथि तय होगी, वह किसी भी दशा में नहीं टलेगी। दो-श्रीराम मन्दिर वहीं बनेगा जहाँ श्रीरामलला की पूजा होती है। सरकार के उपेक्षात्मक रवैये से दुःखी महन्त जी ने यहीं घोषणा कर दी कि अब अयोध्या में श्रीरामशिलाएं ही नहीं श्रीरामभक्त भी आयेंगे। महन्त जी ने कहा कि जिन पाँच लाख गाँवों से श्रीरामशिलाएँ आयी हैं, उन्हीं गाँवों से अब पाँच लाख श्रीरामभक्त अयोध्या आयेंगे।[४०] महन्त जी की इस घोषणा के पश्चात हरिद्वार के सन्त सम्मेलन में श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण की तिथि ३० अक्टूबर घोषित कर दी गई।[४१] महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने २४ जून को पत्रकार वार्ता में कहा कि ऐतिहासिक प्रमाणों के बावजूद, हमारे द्वारा बार-बार समय दिये जाने पर केन्द्र तथा प्रदेश सरकार राजनीतिक स्वार्थ के लिए वास्तविकता को नजरअन्दाज कर रही हैं; किन्तु देश की करोड़ों हिन्दू जनता की भावनाओं का आदर करते हुए हम श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण हेतु कृत संकल्प हैं। संवाददाताओं द्वारा यह पूछे जाने पर कि क्या विद्यमान मस्जिद को गिरा दिया जायेगा? महन्त जी ने दो टूक शब्दों में कहा कि-उस भवन का स्वरूप मस्जिद का नहीं है, वहाँ कोई नमाज अदा नहीं करता। बल्कि वहाँ वर्षों से श्रीरामजी की पूजा-अर्चना हो रही है। अतः हम कोई नया मन्दिर नहीं बनाने जा रहे, अपितु श्रीरामजन्मभूमि पर निर्मित मन्दिर का जीर्णोद्धार करने जा रहे हैं। हम सरकार द्वारा उत्पन्न की गई अड़चनों के विरुद्ध शान्तिपूर्ण संघर्ष करेंगे। हिन्दू समाज के मान-सम्मान के लिए जेल जाने को तैयार हैं, गोली खाने को तैयार हैं।[४२] इसी बीच उत्तर प्रदेश सरकार में श्री मुलायम सिंह यादव के मंत्रिमण्डल के श्रममंत्री आजमखां ने मेरठ के चन्दौली मेले में घोषणा कर दी कि बाबरी मस्जिद की ओर उठने वाली आँख को बाहर निकाल लिया जायेगा।[४३]

श्री आजमखाँ के इस बयान के बाद टकराव की स्थिति बढ़ने लगी। श्री मुलायम सिंह एवं उनकी सरकार आक्रामक हो गयी और उनके द्वारा सन्त-महात्माओं के खिलाफ अनर्गल प्रलाप प्रारम्भ हो गये। १४ जुलाई १९९० को मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने स्वयं कहा कि - हिन्दू धर्म के ठेकेदार सात जन्म में भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित नहीं करा सकते।[४४] मुख्यमंत्री के बयान के पश्चात गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज दहाड़ उठे, उन्होंने चुनौती देते हुए कहा कि भारत हिन्दू राष्ट्र था, हिन्दू राष्ट्र है, और हिन्दू राष्ट्र रहेगा। भारत के इतिहास में जयचन्द एवं मानसिंह सरीखे गद्दारों का हमेशा अस्तित्व रहा है, जो देश, धर्म एवं संस्कृति का विरोध करने में ही स्वयं को गौरवान्वित समझते हैं। ऐसे ही राजनीतिज्ञों के कारण भारत यह दुर्दिन देख रहा है। श्री मुलायम सिंह यादव को मालूम होना चाहिए कि भारतवर्ष उसी दिन वैधानिक हिन्दू राष्ट्र भी बन गया जब मजहब के नाम पर देश का विभाजन कर दिया गया। श्री मुलायम सिंह यादव सात जन्मों की बात छोड़ें, उनके जीवन काल में ही भारत की प्रतिष्ठा हिन्दू राष्ट्र के रूप में होगी और वह भी हिन्दू राष्ट्र का नागरिक होने में गौरवान्वित होंगे।[४५]

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन तेज होता गया। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा हिन्दू समाज को चिढ़ाने तथा अपमानित करने वाले निरन्तर दिये जा रहे बयानों ने आग में घी का काम किया। सन्त-महात्मा अपनी जान की परवाह किये बगैर इस आन्दोलन को जीवन-मरण का प्रश्न बनाते गये। २६ जुलाई को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज लखनऊ पहुँचकर उत्तर प्रदेश सरकार को चेतावनी देते हुए बोले-श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर विरोधी सरकार ज्यादा दिन तक नहीं चल सकती। हिन्दुओं के धैर्य की सीमा समाप्त हो रही है। ३० अक्टूबर को हर हाल में मन्दिर निर्माण का कार्य शुरू होगा। युवकों का बलिदानी जत्था अयोध या जायेगा। कारसेवा में सरकारी तन्त्र ने बाधा डाली तो अहिंसक गिरफ्तारी दी जायेगी और शासन यदि गोली चलाता है तो हम हर तरह की कुर्बानी देंगे।[४६]

श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति ने व्यापक जन-जागरण अभियान आरम्भ कर दिया। श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने जन-जागरण अभियान घोषित करते हुए कहा कि देशभर में दीपावली के दीप श्रीरामज्योति से जलेंगे। अयोध्या में अरणीमन्थन से प्रज्वलित दीप से भगवान् श्रीराम की आरती कर श्रीरामज्योति विजयादशमी तक भारत के सभी अंचलों तक पहुँचा दिया जायेगा। चारोंधाम, सप्तपुरियों, द्वादश ज्योतिर्लिंग, बावन शक्ति पीठों, समस्त वैष्णव पीठ, गणपति पीठ, सिख, जैन, बौद्ध आदि के लगभग ढाई सौ तीर्थ स्थलों से श्रीरामज्योति यात्रा निकलेगी। १२ अक्टूबर से १८ अक्टूबर के मध्य प्रत्येक गाँव के मन्दिरों से घर-घर श्रीरामज्योति पहुँचेगी। विजयादशमी के दिन दस बजकर सैंतालिस मिनट से दस बजकर इक्यावन मिनट के शुभमुहूर्त में श्रीराम भक्त हर मोहल्ले, हर गाँव के मन्दिर से श्रीराम संकीर्तन करते हुए गाँव के जलाशयों तक विजय-यात्रा निकालें। महन्त जी ने घोषणा की कि स्वतंत्रता दिवस को रात्रि में नौ बजे शंख, घण्टे-घड़ियाल की ध्वनि के साथ चेतावनी दिवस के रूप में मनाएँ।[४७] वस्तुतः श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मन्दिर

निर्माण के लिए यह उद्घोष उत्तर प्रदेश सरकार की नींद हराम करने वाला था। श्री मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार तथा श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार 'मुस्लिम वोट बैंक' का सौदा करते हुए बहुसंख्यक हिन्दू समाज में पनप रहे आक्रोश को आँक न सकी। उत्तर प्रदेश सरकार जहाँ हिन्दू समाज के प्रति हमलावर होती गयी वहीं केन्द्र सरकार ने हिन्दू समाज को अगड़ों-पिछड़ों में बाँटने का 'मण्डल-आयोग' का ब्रह्मास्त्र चला दिया। उत्तर प्रदेश के मुखिया श्री मुलायम सिंह यादव ने 'गोरक्षपीठ' के नगर गोरखपुर में २० सितम्बर को साम्प्रदायिकता विरोधी रैली, यह कहते हुए घोषित कर दी कि-'गोरखपुर में महन्त जी रहते हैं, अतः गोरखपुर में ही यह रैली कर अपनी शक्ति दिखा दूँगा।'

मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव को महन्त जी ने भी अपना जवाब दे दिया। महन्त जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार साम्प्रदायिकता विरोधी सम्मेलनों के नाम पर बहुसंख्यक हिन्दू समाज के विरुद्ध विषवमन कर रही है। वोटों के लिए सरकार स्वयं साम्प्रदायिकता को पाल-पोसकर बढ़ावा दे रही है। प्रदेश सरकार के इस कृत्य से प्रदेश में साम्प्रदायिक सद्भाव टूट रहा है तथा साम्प्रदायिक टकराव की भयावह स्थिति पैदा होने जा रही है। प्रदेश सरकार प्रदेश में साम्प्रदायिक दंगे कराने की पृष्ठभूमि तैयार कर रही है। महन्त जी ने कहा कि श्री मुलायम सिंह अपनी सरकारी रैली कर लें, फिर गोरखपुर में ही नहीं देश-प्रदेश भर में जहाँ-जहाँ उनकी सरकार हिन्दू विरोधी रैली करेगी हम उसका जवाब रैली से ही देंगे।[४८] महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में देश भर में जनान्दोलन तेज होता गया। प्रदेश सरकार को समय-समय पर महन्त जी आगाह करते रहे, चेताते रहे। किन्तु सत्तामद में चूर श्री मुलायम सिंह यादव की सरकार आने वाली जनक्रान्ति की हुँकार न सुन सकी। महन्त जी ने जयपुर (राजस्थान) की एक सभा में कहा कि संसार की कोई ताकत श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण नहीं रोक सकती।[४९] उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पंचकोसी परिक्रमा पर रोक लगा दिया गया। महन्त जी ने सरकार को चेताया-श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण तथा पंचकोसी परिक्रमा सरकार की अनुमति की मोहताज नहीं।[५०]

इसी बीच पूर्व सांसद अशफाक हुसैन ने महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के पास एक पत्र भेजा। उस पत्र का महाराज जी ने जो जवाब दिया, वह पूरा पत्र श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण के सन्दर्भ में महन्त जी का दृष्टिकोण स्पष्ट कर देता है। पूरा पत्र समाचार-पत्रों ने प्रकाशित किया। महन्त जी ने पत्र में लिखा कि-'अयाध्या स्थित श्रीरामजन्मभूमि को हिन्दुओं को सौंपे बिना इस समस्या के समाधान का दूसरा कोई विकल्प नहीं है। मैं आपके इस विचार से सहमत हूँ कि रामजन्मभूमि विवाद का स्थाई हल निकाला जाना चाहिए। आपको ज्ञात है कि मैं सभी पंथों के पूजास्थलों का सम्मान करता हूँ। यह बात आपने अपने पत्र में लिखा ही है। यदि मस्जिद के प्रति मेरा कोई दुराग्रह होता तो कदाचित पुराने गोरखपुर की मस्जिद के सम्बन्ध में कोई समझौता नहीं किया होता।

जहाँ तक श्रीरामजन्मभूमि का प्रश्न है उस स्थान से भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि के रूप में करोड़ों हिन्दुओं की भावनाएँ जुड़ी हुई हैं तथा उनके आराध्य देव भगवान् श्रीराम का वह जन्म स्थान है। वह स्थान

श्रीराम का जन्म स्थान है, यह तथ्य प्रामाणिक और असंदिग्ध है; अनेक मुस्लिम इतिहासकारों ने भी निर्विवाद रूप से इसे स्वीकार किया है। श्री अलीमियां नदवी के पिताजी ने जो ग्रन्थ लिखा है, उसमें उन्होंने स्पष्ट कहा कि देश में जिन अनेक मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनी हैं उनमें अयोध्या के रामजन्मभूमि के मन्दिर को तोड़कर बाबरी मस्जिद बनाई गई है। इसी प्रकार अन्य मुसलमानों ने भी इस सम्बन्ध में लेख प्रकाशित किये हैं। इस्लाम की दृष्टि से भी वह इमारत कभी मस्जिद नहीं हो सकती क्योंकि विवादित होने के साथ-साथ पचासी वर्षों में उस स्थान पर कभी भी मुसलमानों ने इबादत नहीं की है। इसलिए मुस्लिम समाज के लिए यह इमारत ईंट-गारे के ढेर के अलावा कुछ नहीं है। उस स्थान के निरीक्षण से भी स्पष्ट हो जाता है कि इस स्थान पर श्रीराम का मन्दिर रहा है - जिसको तोड़कर बाबर के सिपहसालार मीरबाकी ने मस्जिद बनायी और दीवारों पर अरबी में लिखवाया कि वह जन्नत से फरिश्तों के उतरने की जगह है। हिन्दू समाज की भावना एवं जन्म स्थान को वापस लेने के लिए संघर्ष को देखते हुए उस समय उन्होंने लिखा है कि उदार बादशाह अकबर ने उस मस्जिद के दरवाजे पर ही रामजन्मभूमि के नाम से हिन्दुओं के सन्तोष के लिए मन्दिर बनवाने की इजाजत दी थी। विवादित ढाँचे के दरवाजे पर ही रामचबूतरा होने से यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि उसी स्थान पर श्रीरामजन्मभूमि का मन्दिर था, जिस पर तथाकथित बाबरी मस्जिद बनी है। हम यह मानते हैं कि तथाकथित बाबरी मस्जिद के लिए आज का मुसलमान दोषी नहीं है, लेकिन देश में हिन्दू-मुस्लिम भाईचारा स्थापित करने के इच्छुक लोगों द्वारा अतीत में की गई गलतियों को सुधारने की दिशा में पहल होनी चाहिए।

जिस प्रकार मोहम्मद साहब के जन्म स्थान के प्रति मुसलमानों की पवित्र भावनाएँ जुड़ी हैं उसी प्रकार श्रीरामजन्मभूमि से सम्पूर्ण हिन्दू समाज की पवित्र भावना भी जुड़ी हुई है। हिन्दू समाज इसे गुलामी का प्रतीक भी मानता है। मन्दिर-मस्जिद का स्थान बदला जा सकता है किन्तु जन्मभूमि नहीं बदली जा सकती। इसलिए इस महत्त्वपूर्ण समस्या का समाधान खोजते समय जन्मभूमि और मन्दिर-मस्जिद में अन्तर को ध्यान में रखा जाना होगा। जो मुसलमान मोहम्मद साहब और श्रीराम को समान आदर की दृष्टि से देखता है वह निश्चित रूप से श्रीराम के जन्मस्थान को भी सम्मान देगा और इस सम्बन्ध में कट्टरपंथी मुस्लिम नेताओं को समझाने का प्रयास करेगा।

आपने श्री अलीमियां और मेरी वार्ता का सुझाव दिया है। उत्तर प्रदेश विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री नियाज हसन ने भी दो वर्ष पहले इसी तरह का प्रयास किया था। मैंने उस समय वार्ता का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था, लेकिन श्री अलीमियां ही किसी दबाव में आकर प्रस्तावित वार्ता से हट गये थे। इसलिए मैं नहीं समझता हूँ कि वे वार्ता के लिए तैयार होंगे।'

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा श्रीरामज्योति यात्रा को रोक दिया गया। प्रदेश सरकार के इस निर्णय के विरोध में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के आह्वान पर प्रदेश भर की दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन हिन्दू जनता ने रोक दिया। महन्त जी ने प्रदेश सरकार को चेताते हुए कहा कि जब तक श्रीरामज्योति यात्रा को आगे बढ़ने की अनुमति

नहीं मिलती तब तक दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन नहीं होगा। अन्ततः मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने महन्त जी से फोन पर बात की, प्रदेश सरकार द्वारा श्रीरामज्योति यात्रा पर लगाई गई रोक वापस ली गई। प्रदेश भर में श्रीरामज्योति यात्राओं के चलने की पुष्टि के पश्चात महन्त जी की अपील पर दुर्गा प्रतिमाओं का विसर्जन प्रारम्भ हुआ।[५१]

मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव द्वारा २० सितम्बर को गोरखपुर में की गई रैली के जवाब में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा ५ अक्टूबर को श्रीरामभक्तों की विशाल रैली का आह्वान किया गया। महाराणा प्रताप इन्टर कालेज के मैदान में श्रीरामभक्तों की ऐतिहासिक रैली में जनता अपने प्रतिष्ठान, दुकानें बन्द कर पहुँची। श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मन्दिर के निर्माण का संकल्प कराते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा प्रदेश सरकार स्वयं जगह-जगह साम्प्रदायिक दंगे करा रही है। हिन्दू समाज एक होकर राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा एवं श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण हेतु आगे बढ़े। मुस्लिम तुष्टीकरण की पराकाष्ठा ही है कि श्रीरामनवमी पर अवकाश की माँग को अनसुना करने वाली सरकार बिन माँगे मोहम्मद साहब के जन्म दिन पर अवकाश घोषित कर रही है।

प्रदेश सरकार द्वारा जगह-जगह साधु-सन्तों की गिरफ्तारी पर नाराज महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक सिंहल के साथ नई दिल्ली में कहा कि उत्तर प्रदेश में साधु-सन्तों की गिरफ्तारियाँ तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ताओं के पुलिस उत्पीड़न ने श्रीराममन्दिर निर्माण समस्या के समाधान हेतु बात-चीत का माहौल बिगाड़ दिया है।[५२] उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा श्रीरामभक्तों की गिरफ्तारी की जाती रही। मुख्यमंत्री और उनके मंत्रियों के भड़काऊ बयान आते रहे। मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह का बहुचर्चित बयान आया कि 'अयोध्या में परिन्दा भी पर नहीं मार पायेगा।' इसी बीच ३० अक्टूबर को घोषित कारसेवा हेतु महन्त जी २६ अक्टूबर को दिल्ली से अयोध्या के लिए प्रस्थान किये। गुप्तचर संस्थाओं की सूचना पर मुख्यमंत्री ने महन्त जी की गिरफ्तारी का आदेश दे दिया। वायरलेस से कम भीड़भाड़ वाले स्टेशन की सूचना दी जाती रही किन्तु आस-पास की हिन्दू जनता के विरोध-प्रदर्शन के कारण महन्त जी की गिरफ्तारी न हो पाने से पेशोपेश में पड़ी प्रदेश सरकार ने पनकी में ट्रेन रुकवाकर महन्त जी को गिरफ्तार कर लिया तथा वहीं 'सर्किट हाउस' में उन्हें कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच उन्हें रखा गया। अपनी गिरफ्तारी के पश्चात महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि श्रीरामजन्मभूमि का आन्दोलन हमारी गिरफ्तारी से ठंडा नहीं पड़ेगा। ३० अक्टूबर को अयोध्या की नाकेबन्दी हो सकती है, पर जो आग हर हिन्दू के सीने में धधक रही है उसे बुझा पाना सरकार की ताकत के परे है। सरकार द्वारा की जा रही गिरफ्तारियाँ हिन्दुओं में मन्दिर निर्माण की इच्छा को और दृढ़ कर रही हैं। महन्त जी ने कहा कि हमारी गिरफ्तारी भारत माता को डायन कहने वाले आजम खाँ सरीखे देशद्रोही मंत्रियों को तुष्ट करना है; किन्तु हिन्दू जनता शान्ति और धैर्य के साथ प्रदेश सरकार के सारे नाकेबन्दी को असफल करते हुए योजनाबद्ध ढंग से अयोध्या की ओर कूच करे। यदि सरकार गिरफ्तार करती

है तो शान्तिपूर्ण गिरफ्तारी दें।[५३] एक समाचार पत्र ने महन्त की गिरफ्तारी पर गोरखपुर में हुए विरोध प्रदर्शन का उल्लेख करते हुए लिखा-महन्त जी की पनकी में गिरफ्तारी की खबर से गोरखपुर के शान्त माहौल में अचानक भूचाल आ गया। देखते ही देखते गोरखनाथ मन्दिर में हजारों भक्त इकट्ठा हो गये। पूर्वाह्न दस बजे साधु-सन्तों के नेतृत्व में उत्तेजित भक्तों की रैली गोरखनाथ मन्दिर से निकल पड़ी। पूरे महानगर की सड़कों पर हिन्दू जनता निकल चुकी थी। महानगर स्वतःस्फूर्त बन्द रहा। रामभक्त लगातार गिरफ्तार किये जा रहे थे। समाचार लिखने तक गिरफ्तारियाँ जारी थीं। महानगर में शाम होते-होते अघोषित कर्फ्यू जैसी स्थिति हो गयी। व्यापारियों ने कल (२८ अक्टूबर) भी महानगर बन्द की घोषणा कर दी हैं।'' वास्तव में गोरखपुर महानगर तीन दिनों तक लगातार बन्द रहा।[५४] ३० अक्टूबर को सरकार के तमाम दम्भपूर्ण दावों के बावजूद लाखों कारसेवक अयोध्या पहुँचे। प्रदेश सरकार की दमनात्मक कार्रवाई में कारसेवकों पर गोलियाँ बरसायी गईं। कितने कारसेवक मारे गये यह न तो सरकार बता पायी न ही किसी अन्य साक्ष्यों से इसकी पुष्टि हो पायी। महन्त जी ने अत्यन्त दुःख भरे शब्दों में मारे गये कारसेवकों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि -''रामभक्तों के खून का एक-एक कतरा हम पर कर्ज है। 'अयोध्या में ३० अक्टूबर को परिंदा भी पर नहीं मार सकेगा', की मुख्यमंत्री की दम्भपूर्ण घोषणा को उनकी जबर्दस्त नाकेबंदी को रौंदकर जिस प्रकार कार सेवकों ने घोषित कारसेवा का शुभारम्भ किया और श्रीरामजन्मभूमि पर भगवाध्वज फहराया वह हमारे लिए प्रेरणादायी है। सरकारी उत्तेजनात्मक कार्रवाइयों के बावजूद हिन्दू जनता का अहिंसक बने रहना राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने के प्रति उसकी निष्ठा का प्रतीक है।''[५५]

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने १५ नवम्बर को अयोध्या जाकर ३० अक्टूबर एवं २ नवम्बर को अयोध्या में प्रदेश सरकार द्वारा निहत्थे एवं शान्तिपूर्वक भजन-कीर्तन कर रहे कारसेवकों पर गोली चलाये जाने तथा उसमें मारे गये कारसेवकों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा अयोध्या में हुए इस नरसंहार की न्यायिक जाँच की माँग की। महन्त जी ने कहा कि मुख्यमंत्री ने निहत्थे तथा शान्तिपूर्वक अपनी उपस्थिति दर्ज कराने वाले कारसेवकों पर गोली बरसाकर नादिरशाह तथा जनरल डायर को भी पीछे छोड़ दिया है। अयोध्या में यथास्थिति बनाये रखने के वचन का सरकार ने ही पालन नहीं किया। शिलान्यास स्थल से छतरी तोड़वाकर एवं श्रीरामलला की मूर्ति हटवाकर सरकार ने कारसेवकों को उकसाया। सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलते हुए, कई-कई दिनों तक बिना कुछ खाये-पीये, नदी-नालों को पारकर कारसेवक अयोध्या पहुँचे और मुस्लिम तुष्टीकरण में पागल हो चुकी सरकार द्वारा गोली चलाये जाने के आदेश के बावजूद अपने प्राणों की बाजी लगाकर कारसेवकों ने कारसेवा प्रारम्भ की, तथाकथित बाबरी ढाँचे पर भगवा फहराया; उससे सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि उसकी दमनकारी नीति तथा गोली के भय से यह जनान्दोलन रुकने वाला नहीं है।

महन्त जी ने कहा कि प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो ३० अक्टूबर को पुलिस फोर्स ने अपने अधिकारियों की बात मानी होती तो उसी दिन भारी नरसंहार हुआ होता। अन्ततः २ नवम्बर को योजनाबद्ध ढंग से मुख्यमंत्री

एवं उनके कुछ मंत्रियों, सांसदों ने एक वर्ग विशेष के पुलिस दस्ते तथा पुलिस वेश में अपराधियों को तैनात कर उनके द्वारा शान्तिपूर्वक श्रीराम धुन में मग्न श्रीरामभक्त कारसेवकों पर गोली चलवायी गई। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि इस नरसंहार में चार सौ से अधिक कारसेवक मारे गये।[५६]

२१ नवम्बर १९९० को महन्त जी ने हिन्दू समाज को 'याचना नहीं अब रण होगा' के हुँकार के साथ संघर्ष हेतु तैयार रहने का आह्वान करते हुए कहा कि सत्ता के लिए कांग्रेस ने श्री मुलायम सिंह जैसे नृशंस हत्यारे के खून से सने हाथ से हाथ मिलाकर स्वयं अपना दामन भी श्रीरामभक्तों के खून से रंग लिया है। कांग्रेस ने श्री मुलायम सिंह की सरकार को समर्थन देकर अपना असली चेहरा भी उजागर कर दिया है। प्रधानमंत्री की कुर्सी पाते ही श्री चन्द्रशेखर का भी राग बदल गया है। प्रधानमंत्री की कुर्सी से एक जयचन्द गया तो उस पर दूसरा मानसिंह बनकर विराजमान हो गया है। महन्त जी ने पुनः ६ दिसम्बर से कारसेवा की घोषणा कर दी। दिसम्बर में कारसेवा करने जा रहे कारसेवकों को गिरफ्तार किया जाता रहा। सात दिसम्बर को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने जगद्गुरु रामानुजाचार्य सहित लगभग एक हजार कारसेवकों के साथ अयोध्या कारसेवा हेतु जाते हुए अपनी गिरफ्तारी दी। इस अवसर पर महन्त जी ने अपने सन्देश में कहा कि हिन्दू समाज ने अयोध्या में कारसेवा हेतु जाने से रोके जाने पर शान्तिपूर्वक गिरफ्तारी देकर यह दिखा दिया है कि अगर उसकी राह में रोड़ा न अटकाया जाय तथा उसे जान-बूझकर चिढ़ाया न जाय तो वह कभी भी उग्र नहीं होगा।[५७] अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य निर्माण के लिए जनजागरण अभियान चलाते हुए महन्त जी ने दर्जनों सभाएँ कीं। २६ दिसम्बर को बड़हलगंज, ३१ दिसम्बर को पीपीगंज, १० जनवरी १९९१ को कैम्पियरगंज, ११ जनवरी को बखिरा में विशाल हिन्दू सम्मेलनों को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सम्बोधित किया। २२ जनवरी १९९१ को गोरखपुर के महाराणा प्रताप इन्टर कालेज के मैदान में विशाल जनसभा महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व एवं अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस जनसभा को साध्वी ऋतम्भरा ने भी सम्बोधित किया।[५८]

२७ फरवरी १९९१ को गोरखपुर में महाराणा प्रताप इन्टर कालेज के मैदान में एक बार फिर महन्त जी के आह्वान पर हिन्दू समाज जुटा। इस जनसभा को विश्वहिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री अशोक सिंहल ने भी सम्बोधित किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि-'हिन्दू सर्वदा से सहनशील और शान्तिप्रिय रहा है; वह सामान्यतः आक्रामक नहीं होता। किन्तु वर्तमान युग में न्याय शान्तिपूर्ण ढंग से मांगने से नहीं अपितु शक्ति और संघर्ष से मिलने वाला है। श्रीरामजन्मभूमि भी यदि शान्ति के साथ न्याय से मिलने वाला होता तो हमें कभी का मिल गया होता। श्रीरामजन्मभूमि पर वर्तमान सत्ता के सौदागर न्याय नहीं होने देना चाहते। हमें अपने आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि शक्ति और संघर्ष से ही प्राप्त करनी होगी। अतः हर हिन्दू परिवार का एक व्यक्ति इस संघर्ष में अवश्य शामिल हो।'[५९] महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने आह्वान किया कि ११ से १५ मार्च तक देश के सभी प्रान्तों में जिला मुख्यालयों पर हिन्दू जनता प्रदर्शन करे। वर्ष प्रतिपदा (१७मार्च) को सभी हिन्दू अपने-अपने घरों पर भगवाध्वज फहराएँ। इसी बीच लोकसभा चुनाव की

घोषणा हो जाने पर महन्त जी ने गोरखपुर संसदीय क्षेत्र से २३ अप्रैल १९९१ को अपना पर्चा 'श्रीराम और रोटी' के मुद्दे पर ही भरा।[६०] २२ अप्रैल १९९१ को मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन की दिल्ली में हुई पत्रकार-वार्ता में यह कहे जाने पर कि महन्त अवेद्यनाथ के कथित साम्प्रदायिक भाषणों के बारे में शिकायत मिली है और चुनाव आयोग ने इसे आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन माना है, प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए महन्त जी ने दो टूक शब्दों में कहा, 'श्रीरामजन्मभूमि पर हिन्दू समाज का हक माँगना और हिन्दू समाज पर हो रहे अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना साम्प्रदायिकता नहीं है, किन्तु अगर मुख्य चुनाव आयुक्त इसे साम्प्रदायिक मानते हैं तो मुझे ऐसी साम्प्रदायिकता मंजूर है और इसके लिए कोई भी सजा भुगतने को हम तैयार हैं। मैं इस प्रकार की धमकी से डरने और घबड़ाने वाला नहीं हूँ। तुष्टीकरण की नीति के चलते हिन्दू समाज के साथ जो अन्याय हो रहा है, उसके लिए सदा लड़ता रहा हूँ, आगे लड़ाई जारी रहेगी। सड़क से संसद तक जनभावनाओं की गर्जना होती रहेगी उसे कोई दबा नहीं सकता।'[६१] अन्ततः लोकसभा चुनाव में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज विजयी हुए और अपनी चुनावी विजय पर उन्होंने कहा कि मेरी विजय तथा प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त जनाधार श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का स्पष्ट जनादेश है। भारतीय जनता पार्टी भी इस जनादेश को स्वीकार करेगी और विश्वास है कि उसका सम्मान करेगी। किन्तु यदि भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश सरकार श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण में आनाकानी करती है तो हम भारतीय जनता पार्टी की सरकार का भी विरोध करेंगे।[६२] २४ अगस्त को एक बार फिर महन्त जी ने कहा प्रदेश सरकार रहे या चली जाय उसे अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण कराना ही होगा। भाजपा को श्रीराम मन्दिर निर्माण का ही जनादेश मिला है। प्रदेश की जनता ने जिस प्रकार प्रदेश की बागडोर भाजपा को सौंपा है उसी प्रकार प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, विपक्ष के नेता श्री राजीव गाँधी, मुस्लिम नेता श्री इमाम बुखारी, श्री शहाबुद्दीन तथा समाजवादी पार्टी के श्री मुलायम सिंह यादव की जिद्द तथा इनके द्वारा हिन्दू समाज को चिढ़ाने के कारण केन्द्रीय सत्ता की बागडोर भी जनता भारतीय जनता पार्टी को सौंप देगी।[६३] महन्त जी की उक्त भविष्यवाणी सत्य हुई और १९९८ तक केन्द्रीय सत्ता की बागडोर भारतीय जनता पार्टी के हाथों देश की जनता ने सौंप दिया। ३० अक्टूबर १९९१ में अयोध्या में शौर्य दिवस का आयोजन हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने किया। महन्त जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मन्दिर का निर्माण किसी की कृपा से नहीं हिन्दू जनता के शौर्य से बनेगा।[६४] १२ जून १९९२ को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि अयोध्या में श्रीराम मन्दिर निर्माण का प्रथम चरण पूरा होने जा रहा है। ९ जुलाई से दूसरा चरण प्रारम्भ हो जायेगा। हम जो भी करेंगे संवैधानिक तरीके से करेंगे। हिन्दू समाज चाहता है कि श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मन्दिर का निर्माण उस गर्भगृह पर ही हो, जहाँ श्रीरामलला की प्रतिमा विद्यमान है। मन्दिर निर्माण के लिए धौलपुर से मँगाए गये संगमरमर को तरासने का कार्य चल रहा है।[६५]

२३ जुलाई १९९२ को श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण हेतु महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अगुवाई में

एक प्रतिनिधिमण्डल प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंहराव से मिला। महन्त जी की प्रधानमंत्री श्री वी.पी. नरसिंहराव से यह तीसरी भेंट थी।[६६] प्रधानमंत्री द्वारा श्रीरामजन्मभूमि मुद्दे के समाधान हेतु तीन महीने का समय माँगे जाने पर शिलान्यास स्थल पर प्रस्तावित कारसेवा रोके जाने की घोषणा करते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि विवादित स्थल के बाहर शेषावतार मन्दिर के निर्माण स्थल पर कारसेवा प्रारम्भ कर दी जायेगी।[६७] महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने २६ जुलाई १६६२ को लोकसभा में श्रीरामजन्मभूमि मुद्दे पर बोलते हुए कहा,' पूर्वाग्रह से ग्रस्त राष्ट्रीय मोर्चा और वाममोर्चा को साथ लेकर अयोध्या विवाद का हल नहीं निकाला जा सकता। हम इस समस्या का हल बात-चीत से चाहते हैं और इसके लिए प्रधानमंत्री को चार महीने का समय भी दे सकते हैं। हमारी इसी मंशा से कारसेवा रुकी है, यदि हम नहीं चाहते तो कारसेवा स्थगित नहीं होती।'[६८] ३१ जुलाई को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने एक विशेष भेंटवार्ता में कहा कि यदि सरकार बातचीत के माध्यम से अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का हल नहीं निकालपाती तो हमारे लिए मन्दिर निर्माण कार्य पुनः शुरू करने के अलावा, कोई अन्य विकल्प नहीं रहेगा। बातचीत के माध्यम से हल निकाल पाने में अपनी असमर्थता घोषित कर यदि सरकार पूरे मामले को न्यायालय को सुपुर्द करती है तो यह कार्रवाई केवल हिन्दू समाज को उलझाये रखने के लिए की जायेगी तथा हिन्दू समाज इस मामले को अब और लटकाये जाने का प्रबल विरोधी है। हम इस समस्या का अविलम्ब हल चाहते हैं। महन्त जी ने कहा कि प्रधानमंत्री का यह बयान दुर्भाग्यपूर्ण है कि बातचीत से समस्या न सुलझने की स्थिति में अयोध्या विवाद से सम्बन्धित सभी मामले विशेष न्यायालय के सुपुर्द किया जा सकता है। महन्त जी ने आगे कहा कि न्यायालय में सिर्फ एक मामले पर विचार किया जाय कि श्रीरामजन्मभूमि स्थल पर, जिसे गर्भगृह कहा जाता है तथा जो विवादित ढाँचे के अन्दर है, वहाँ कभी मन्दिर था या नहीं, मन्दिर तोड़कर वहाँ मस्जिद बनायी गयी या नहीं।[६६] २१ अक्टूबर १६६२ को महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने देवरिया की जनसभा में कहा कि श्रीराम मन्दिर निर्माण के प्रश्न पर हमें देश की जनता का निर्णय शिरोधार्य होगा। श्रीरामजन्मभूमि के प्रश्न पर सरकार जनमत संग्रह करा ले अथवा आम चुनाव करा ले यदि हम हार गये तो अपना दावा छोड़ देंगे और यदि जनमत श्रीराम मन्दिर के पक्ष में आता है तो सरकार मन्दिर का निर्माण कराने दे। महन्त जी ने कहा कि प्रधानमंत्री महोदय में सच कहने, स्वीकार करने तथा निर्णय लेने की क्षमता नहीं है अतः चल रही वार्ताओं का कोई हल निकलने वाला नहीं है।[७०]

३० अक्टूबर १६६२ को दिल्ली में महारानी झांसी स्टेडियम में पाचवें धर्म संसद का आयोजन हुआ। प्रधानमंत्री महोदय को श्रीराम मन्दिर निर्माण पर वार्ता हेतु दिया गया तीन माह का समय २६ अक्टूबर को पूरा हो गया। धर्म संसद ने ६ दिसम्बर १६६२ से श्रीराम मन्दिर निर्माण हेतु कारसेवा प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने धर्मसंसद के निर्णय की जानकारी देते हुए कहा कि मन्दिर निर्माण की तिथि के कारण केन्द्र सरकार को एक माह का और समय हमने दे दिया है, किन्तु ६ दिसम्बर से कारसेवा का निर्णय अन्तिम है और निर्णायक है।[७१] अन्ततः केन्द्र सरकार इस दौरान मूकदर्शक बनी रही और धर्म संसद के निर्णय

के अनुसार सन्त महात्माओं के आह्वान पर ६ दिसम्बर १९९२ को अयोध्या में एकत्रित कारसेवकों ने महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सहित देश के प्रतिष्ठित सभी पंथों के प्रमुख धर्माचार्यों, सन्त-महात्माओं तथा भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेताओं की उपस्थिति में निर्णायक कारसेवा प्रारम्भ की और देखते-देखते विदेशी आक्रमणकारी द्वारा मन्दिर तोड़कर बनाया गया विवादित ढाँचा मलवे में तब्दील हो गया तथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि अपमानजनक ढाँचे के आगोश से मुक्त हो गयी तथा वहाँ श्रीरामभक्तों ने श्रीरामलला का अपनी श्रद्धा से एक छोटा सा मन्दिर बना दिया और श्रीरामलला की प्रतिष्ठा कर पूजन-अर्चन प्रारम्भ कर दिया। प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिंहराव के नेतृत्व की सरकार ने उत्तर प्रदेश में तत्कालीन श्रीरामभक्त मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह का त्याग-पत्र स्वीकार करने की बजाय उत्तर प्रदेश सहित भारतीय जनता पार्टी के सभी राज्य सरकारों को बर्खास्त करने का तुगलकी फरमान जारी कर दिया। अयोध्या में श्रीरामलला के दर्शन एवं पूजा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की अध्यक्षता में साधु-सन्तों ने फिर हुँकार भरी। २३ दिसम्बर को अयोध्या में एकत्र हुए, साधु-सन्तों ने २६ दिसम्बर से श्रीरामलला के दर्शन हेतु पुनः संघर्ष की घोषणा कर दी। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि श्रीरामलला के दर्शन-पूजन पर यदि सरकार प्रतिबन्ध नहीं हटाती तो २६ दिसम्बर को हम निषेधाज्ञा तोड़कर जेलभरो आन्दोलन शुरू करेंगे। २३ दिसम्बर को ही महन्त नृत्य गोपालदास, डॉ. रामविलास वेदान्ती, परमहंस रामचन्द्रदास जी महाराज सहित सैकड़ों की संख्या में एकत्र साधु-सन्त श्रीरामलला के दर्शन हेतु इतने उद्वेलित थे कि वे तुरन्त निषेधाज्ञा तोड़कर श्रीरामलला के दर्शन हेतु कूच करना चाहते थे, किन्तु महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि आज हम जिलाधिकारी से मिलकर २५ दिसम्बर तक का समय दे चुके हैं, अतः तब तक हम धैर्य के साथ सरकार के निर्णय की प्रतीक्षा करें। २६ दिसम्बर को अयोध्या की हर गली एवं रास्तों से श्रीरामलला के दर्शन के लिए प्रस्थान किया जायेगा और तब यदि प्रशासन ने बाधा डाली तो जेल भरो आन्दोलन शुरू होगा।[७२] अन्ततः सरकार को झुकना पड़ा और कड़ी सुरक्षा के बीच श्रद्धालुओं को श्रीरामलला के दर्शन की अनुमति प्रदान कर दी गई। इसी बीच इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने भी श्रीरामभक्तों को श्रीरामलला के दर्शन का निर्णय दे दिया।

कांग्रेस ने इसी बीच एक नयी चाल चली। उसने स्वरूपानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में एक ट्रस्ट बनाकर मन्दिर निर्माण की शुरुआत करने का शिगूफा छोड़ा। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हाराव को चेतावनी देते हुए कहा कि अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर किसी मजिस्ट्रेट द्वारा मन्दिर निर्माण कराये जाने को हिन्दू समाज स्वीकार नहीं करेगा। सरकार स्वयं साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने पर तुली है जबकि हम मुस्लिम समाज को राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल करने के पक्षधर हैं। हमारी लड़ाई सरकार के दोहरे मापदण्ड के खिलाफ है और यह उसके समाप्त होने तक जारी रहेगी। प्रधानमंत्री द्वारा अयोध्या में मन्दिर के साथ मस्जिद निर्माण की घोषणा पर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज गरज पड़े। उन्होंने कहा जब तक एक भी सन्त जीवित रहेगा तब तक अयोध्या में मस्जिद निर्माण नहीं होने दिया जायेगा। अयोध्या में मस्जिद का निर्माण दिवास्वप्न है।[७३]

९ मई १९९३ को श्रीरामन्दिर निर्माण के समर्थन में ९ करोड़ ७७ लाख ३ हजार ७ सौ ५३ लोगों के हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सहित साधु-सन्तों एवं भाजपा के शीर्षस्थ नेताओं के प्रतिनिधिमण्डल ने राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा को सौंपा।[७४] ३० जून १९९३ को एक समाचार पत्र के संवाददाता से विशेष भेंट वार्ता में उसके प्रश्नों का उत्तर देते हुए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा- 'विश्व हिन्दू परिषद् को श्रीराम मन्दिर निर्माण के लिए किसी भी ऐसे न्यास के बनाने पर कोई आपत्ति नहीं है, जिसमें सरकार के भी प्रतिनिधि संत शामिल हों। गत दिनों स्वामी जैनेन्द्र सरस्वती ने ऐसा एक प्रस्ताव रखा था कि श्रीराम मन्दिर निर्माण के लिए एक अलग मंच बनाया जाय। विश्व हिन्दू परिषद् ने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। हम तो आज भी अपने प्रस्ताव पर कायम हैं। हमारा उद्देश्य श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मन्दिर का निर्माण है, जो साधु-सन्तों की देख-रेख में पूरी धार्मिक आस्था के साथ बनाया जाय। यदि कांग्रेस को लगता है कि श्रीराम मन्दिर के निर्माण का लाभ भारतीय जनता पार्टी को मिलेगा, तो वह स्वयं आगे बढ़े। हम तो उन सभी राजनीतिक दलों का समर्थन करेंगे जो श्रीराम मन्दिर के निर्माण में सहायक होंगे। किन्तु ऐसा नैतिक साहस कांग्रेस सहित तथाकथित सेकुलरिस्टों में हो ही नहीं सकता, अन्य देश और उसकी संस्कृति की कीमत पर वे वोट की राजनीति करते ही नहीं। जब हमने यह आन्दोलन प्रारम्भ किया तो भारतीय जनता पार्टी भी समर्थन में नहीं थी। बाद में जब उसे लगा कि श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का यह आन्दोलन राष्ट्रवाद तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान से जुड़ा आन्दोलन है और इसे समर्थन देना चाहिए, तब भाजपा समर्थन में कूदी। समर्थन के लिए हमने भाजपा को बुलाया नहीं था। यदि यह कार्य कांग्रेस ने किया होता तो जनसमर्थन उसके ही पक्ष में होता। किन्तु कांग्रेस का इतिहास साक्षी है कि वह हिन्दू समाज को जातियों के खाँचे में बाँटे रखने तथा मूर्ख बनाने में ही अपना राजनीतिक लाभ देखती रही। गोहत्या बन्द करने पर आजादी के बाद उभरे जनान्दोलन तथा सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के आमरण अनशन पर बैठ जाने पर कांग्रेस ने आश्वासन देकर अनशन तो तुड़वा दिया और आन्दोलन रुक गया किन्तु वह कानून आज तक नहीं बन पाया। अपनी बार-बार की वादाखिलाफी से ही सन्त-महात्माओं तथा धर्माचार्यों का विश्वास कांग्रेस ने खो दिया है।[७५] १८ अक्टूबर १९९४ को महन्त जी ने जोधपुर के गाँधी मैदान में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि सरकार संसद में घोषित करे कि जिस स्थान पर भगवान् श्रीराम का जन्म हुआ था, वहीं मन्दिर का निर्माण कराया जायेगा, तो श्रीराम मन्दिर निर्माण हेतु अनवरत जारी हम अपना आन्दोलन स्थगित कर देंगे।[७६]

१९९८ के लोकसभा चुनाव में अपने उत्तराधिकारी शिष्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज को प्रत्याशी बनाकर महन्त जी ने घोषित कर दिया कि राजनीतिक मोर्चा अब उनके शिष्य योगी जी संभालेंगे तथा धर्म के मोर्चे पर वे स्वयं डटे रहेंगे। २००२ में श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण को लेकर हुँकार भरने वाले सन्त-महात्माओं का नेतृत्व करते हुए महन्त जी ने केन्द्र सरकार को चुनौती दी थी। भारतीय जनता पार्टी को चेतावनी देते हुए १४ फरवरी को उन्होंने कहा कि श्रीराम मन्दिर का मुद्दा छोड़ना भारतीय जनता पार्टी को भारी पड़ेगा।[७७] ४ मार्च

२००२ को श्री परमहंस रामचन्द्र दास तथा श्री अशोक सिंहल के साथ संयुक्त प्रेस-वार्ता में महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने कहा कि न तो यह यज्ञ रुकेगा और न मन्दिर निर्माण। अन्ततः प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के विशेष प्रतिनिधि की उपस्थिति में शिलापूजन कार्य सम्पन्न हुआ।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की यह चेतावनी भी सच साबित हुई और श्रीरामजन्मभूमि का मुद्दा छोड़ चुनाव लड़ने वाली भारतीय जनता पार्टी सत्ता से बेदखल कर दी गई। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज उम्र की बंदिशों से शारीरिक रूप से बेबस होते गये और चौथी दुनिया के एक संवाददाता से कुछ दिन पहले ही बात करते-करते वे भावुक हो उठे तथा कह पड़े-'मेरा स्वास्थ्य लगातार गिर रहा है। मैं केवल श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त होते हुए देखने के लिए ही जी रहा हूँ। मेरी यही इच्छा है कि मैं जीते-जी श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य मन्दिर निर्माण का निर्णायक शुभारम्भ देख लूँ।'

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सहित दर्जनों सन्त-महात्माओं एवं भाजपा के शीर्षस्थ नेतृत्व के खिलाफ श्रीरामजन्मभूमि पर स्थित विवादित ढाँचा ढहाये जाने का मुकदमा दर्ज है। केन्द्र सरकार द्वारा गठित लिब्रहान आयोग की तथ्यहीन, त्रुटिपूर्ण अनर्गल प्रलापों से भरी रिपोर्ट की अर्थी उठ चुकी है। महन्त जी को भी इस आयोग के समक्ष प्रस्तुत होना पड़ा। (लिब्रहान आयोग के समक्ष महन्त जी द्वारा कहे गये तथ्य सम्पूर्ण रूप में इसी ग्रन्थ में आगे प्रकाशित हैं।)

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में लगभग दो दशक तक अनवरत चले श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन ने न केवल श्रीरामजन्मभूमि पर हिन्दू समाज को अपमानित करते हुए चिढ़ाने वाला ढाँचा ध्वस्त हुआ अपितु आजाद भारत में हिन्दू विरोधी राजनीति का ढाँचा भी टूटा। भारत सहित दुनिया भर में 'हिन्दुत्व' बहस का मुद्दा बना और हिन्दुत्व पुनर्जागरण के एक नये युग का शुभारम्भ हुआ। हिन्दू समाज के विविध पंथों के धर्माचार्य एक साथ एक मंच पर आये। यह युग भारत में हिन्दू एकता के लिए तो जाना ही जायेगा साथ ही महात्मा गाँधी की इस उक्ति को झुठलाने के लिए भी प्रामाणिक होगा कि 'हिन्दू कायर होता है'। श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन की सफलता के तमाम महत्त्वपूर्ण कारणों में एक महत्त्वपूर्ण कारण गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का नेतृत्व सभी पंथों के धर्माचार्यों द्वारा सर्वस्वीकार्य होना भी था। भारत के इतिहास में जब भी श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन पर चर्चा होगी, वह चर्चा महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के बगैर अधूरी मानी जायेगी।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के मसीहा :

महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन के समय ही गोरक्षपीठ ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा का दीप जलाया। १९३२ ईस्वी में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना इसी प्रज्वलित दीप के प्रकाश की एक किरण थी। स्वाधीनता आन्दोलन के समय भारतीय मनीषियों को यह महसूस हो चुका था कि आजादी प्राप्त होने के बाद आजाद भारत का नेतृत्व करने वाली पीढ़ी रूप-रंग के साथ-साथ आचार-व्यवहार से भी भारतीय होनी चाहिए। एक तरफ स्वामी विवेकानन्द अंग्रेजी शासन की शिक्षा पर कह रहे

थे- ये शिक्षा हमें हमारे महान पुरुषों के इतिहास से नहीं अपितु अंग्रेजों महान पुरुषों के इतिहास से अवगत कराती है। ये शिक्षा हमें दुर्बल बनाती है, सबल नहीं। शिक्षा के माने कण्ठस्थ करना नहीं है अपितु शिक्षा आवश्यकता के अनुरूप ही दी जानी चाहिए। शिक्षा वही है जो राष्ट्रीय पद्धति से दी जाये। स्वामी जी आगे कहते हैं- जब तक लाखों लोग भूखे और अज्ञानी हैं, तब तक मैं इस प्रत्येक व्यक्ति को कृतघ्न समझता हूँ, जो उनके बल पर शिक्षित तो बना परन्तु आज उसकी ओर ध्यान तक नहीं देता।[७८] दूसरी तरफ लार्ड मैकाले की आवाज गूँज रही थी- हमारे अंग्रेजी विद्यालय प्रशंसनीय ढंग से असाधारण उन्नति कर रहे हैं।..... मेरी बनाई शिक्षा पद्धति से यहाँ (भारत में) यदि शिक्षा प्रणाली चलती रही तो आगामी तीस वर्षों में एक भी आस्थावान हिन्दू नहीं बचेगा। या तो वे ईसाई बन जायेंगे या नाम मात्र के हिन्दू बने रहेंगे। धर्म या वेदशास्त्रों पर उनका विश्वास नहीं होगा।[७९]

मैकाले की शिक्षा पद्धति की अनुगूँज आनन्द कुमार स्वामी की पीड़ा में भी सुनाई देती है, जब वे कहते हैं- इसे अनुभव करना बहुत कठिन है कि कैसे भारतीय जीवन के सातत्य को पूर्णतया विच्छिन्न कर दिया गया है। अंग्रेजी शिक्षा की केवल एक पीढ़ी तथा यह अपने मूल से वंचित ऐसे अल्पज्ञ बौद्धिक अस्पृश्य का सृजन करती है जो पूर्व अथवा पश्चिम, भूत अथवा भविष्य कहीं का नहीं है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक भयप्रद है उसकी आध्यात्मिक सातत्य नष्ट होने की सम्भावना। भारत की सभी समस्याओं में सर्वाधिक कठिन तथा परम अनर्थकारी है शिक्षा की समस्या।[८०]

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने भारतीय मनीषियों की इन्हीं चिन्ताओं के समाधान तथा लार्ड मैकाले द्वारा उत्पन्न की गई चुनौती से निपटने के लिए भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुरूप शिक्षा का तन्त्र खड़ा करने की नींव १९३२ ईस्वी में रख दी।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपने वरेण्य गुरुदेव महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के सपनों को साकार किया। उन्होंने अपनी निष्ठा, सुदीर्घकालीन तपस्या और अनुभव की पूँजी से उत्तरोत्तर समृद्ध और समुन्नत करते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् को वृहत्तर स्वरूप प्रदान किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत आज तीन दर्जन से अधिक शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान, चिकित्सा संस्थान तथा सेवा संस्थान संचालित हो रहे हैं। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के परम्परागत शिक्षण संस्थानों के साथ-साथ तकनीकी एवं स्वास्थ्य शिक्षा के संस्थानों में हजारों छात्र-छात्राएँ रोजगारपरक पुस्तकीय पाठ्यक्रमों के साथ-साथ भारतीयता तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ रहे हैं। प्रतिवर्ष ४ दिसम्बर से १० दिसम्बर तक चलने वाले महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक सप्ताह-समारोह तथा ४ दिसम्बर को निकलने वाली गोरखपुर महानगर की सड़कों पर शोभा-यात्रा में सम्मिलित समस्त शिक्षण संस्थाओं के हजारों अनुशासित तथा राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत युवा पीढ़ी को देखकर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के साकार स्वप्न का अनुभव किया जा सकता है। सम्भवतः यह देश का ऐसा एकमात्र शिक्षा संस्थान है जो प्रतिवर्ष लगभग साढ़े छः सौ छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति देता है तथा

विद्यार्थियों के समग्र विकास में भारतीयता को सर्वाधिक महत्त्व देता है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत १९४९-५० में स्थापित महाराणा प्रताप महाविद्यालय को गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु १९५८ ईस्वी में महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा समर्पित कर दिये जाने की स्मृतियों को संजोये महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने पुनः २००५ ईस्वी में जंगल धूसड़ में महाराणा प्रताप महाविद्यालय तथा २००६ ईस्वी में गोरखपुर महानगर के रामदत्तपुर में महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की स्थापना की। शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी गुरुश्री गोरखनाथ चिकित्सालय, गुरुश्री गोरखनाथ योग संस्थान तथा महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय की स्थापना एवं उनका उत्तरोत्तर विकास महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की जन-सेवा के क्षेत्र की उल्लेखनीय उपलब्धि है, जिनके माध्यम से उनकी यशगाथा पुष्प के सुगन्ध की तरह प्रसरित है।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज का विराट व्यक्तित्व एक ऐसे मनीषी का विराट स्वरूप है जिसमें 'धर्म' का साक्षात् दर्शन होता है। उन्होंने भारतीय राजनीति को एक नयी दिशा दी; कथित धर्मनिरपेक्ष राजनीति की दूषित अवधारणा को नकारते हुए धर्माधिष्ठित राजनीति की प्रतिष्ठा की। भारतीय समाज में 'जातिवाद' की विषबेलि को समूल उखाड़ फेंका और बिना किसी की परवाह के सामाजिक समरसता का मूलमंत्र देकर भारतीय धर्मगुरुओं का नेतृत्व किया तथा छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरुद्ध जन-जागरण अभियान छेड़कर हिन्दू समाज को एकता का पाठ पढ़ाया। शिक्षा और स्वास्थ्य को जन-सेवा का आधार बनाकर 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' उक्ति को चरितार्थ किया। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन के बहाने पंथों के नाम पर बँटे धर्मगुरुओं को एक मंच पर लाकर राष्ट्रीय स्वाभियान तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का शंखनाद किया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अपने युग के एक ऐसे महानायक हैं जिन्होंने राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक साथ पुनर्जागरण का उद्घोष किया। भारत के बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध के तथा इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भिक दशकों में वे जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। वे ऐसे महायोगी हैं जिनका अन्तःकरण समता में स्थित है, जिन्होंने इस जीवित अवस्था में ही सबको जीत लिया है, जो जीव-मुक्त हो गये हैं और ब्रह्म में ही स्थित हैं; जैसा कि भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं-

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्मतस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः।।

❖❖❖❖❖

सन्दर्भ :

१. प्रो. शिवाजी सिंह, पुराणान्तर्गत इतिहास, २०१०, पृष्ठ १०
२. २४ मार्च १९९६, राष्ट्रीय सहारा, गोरखपुर
३.
४. आज, गोरखपुर, ७ अप्रैल, १९९१
५. दैनिक जागरण, दैनिक आज, गोरखपुर, २४.९.८९
६. ७ मार्च १९९०, वृन्दावन, अमर उजाला
७. पिलखुआ के रामलीला मैदान में विशान हिन्दू सम्मेलन, २६ अप्रैल, १९९०, अमर उजाला, मेरठ
८. १० जुलाई १९९६, दैनिक जागरण, गोरखपुर
८-क. ८ जनवरी १९९०, दैनिक जागरण, गोरखपुर
९. १० जुलाई १९९०, दैनिक जागरण, गोरखपुर; १२ अप्रैल १९९०, आज, गोरखपुर
१०. २० अक्टूबर १९९२, दैनिक जागरण, हाटा, देवरिया
११. १३ सितम्बर १९९१, राष्ट्रीय सहारा, गोरखपुर
१२. २९ सितम्बर १९९३, आज, गोरखपुर
१३. ६ मई १९९३, आज, घुघली, देवरिया
१४. २७ अगस्त १९९६, राष्ट्रीय सहारा, शोहरतगढ़
१५. ४ नवम्बर १९९९, दैनिक जागरण, गोरखपुर
१५-क.'आज', वाराणसी, १९ मार्च, १९९४, राष्ट्रीय सहारा, गोरखपुर संस्करण
१६. जनसत्ता, १७ जून १९९३
१७. स्वतन्त्र चेतना, ४ अक्टूबर १९८९, गोरखपुर
१८. अमर उजाला, १६ अप्रैल १९९०, मेरठ
१९. आज, ७ सितम्बर १९९०, गोरखपुर
२०. दैनिक जागरण, २६ जून १९९१
२१. दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा, २७ अप्रैल १९९२, गोरखपुर
२२. दैनिक जागरण, २० अक्टूबर १९९२, हाटा (देवरिया)
२३. जनसत्ता, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी, सोलन, २ मई १९९४
२४. दैनिक जागरण, आज, गोरखपुर २६ सितम्बर १९९४
२५. २१ जनवरी १९९४ आज, कानपुर
२६. २१, नवम्बर १९९४, आज, गोरखपुर
२७. जनसत्ता, नई दिल्ली, २४ सितम्बर १९८९ ई.
२८. दैनिक जागरण, गोरखपुर, २ अक्टूबर, १९८९ ई.
२९. स्वतन्त्र चेतना, गोरखपुर, ४ अक्टूबर १९८९ ई.
३०. अमृत प्रभात, लखनऊ, ७ अक्टूबर १९८९ ई.

३१. स्वतंत्र चेतना, दैनिक जागरण, गोरखपुर ६ नवम्बर १९८६ ई.
३२. दैनिक जागरण, गोरखपुर १० नवम्बर १९८६ ई.
३३. दैनिक जागरण, आज, ११ नवम्बर १९८६ ई.
३४. दैनिक जागरण, ११ नवम्बर १९८६ ई. गोरखपुर
३५. आज, गोरखपुर १५ नवम्बर १९८६ ई.
३६. नवभारत टाइम्स, १३ दिसम्बर, नई दिल्ली
३७. दैनिक जागरण, २७ फरवरी १९९०, इलाहाबाद
३८. नवभारत टाइम्स, १० फरवरी १९९०, दिल्ली
३९. आज, ११ फरवरी १९९०, गोरखपुर
४०. संडे आब्जर्वर, १० जून, १९९०, नई दिल्ली
४१. स्वतंत्र भारत, २३ जून, १९९०, लखनऊ, हरिद्वार
४२. दैनिक जागरण, २५ जून, १९९०, गोरखपुर, हरिद्वार
४३. अमर उजाला, २५ जून, १९९०, मेरठ
४४. आज, दैनिक जागरण, १४ जुलाई १९९०, लखनऊ
४५. आज, दैनिक जागरण, १४ जुलाई १९९०, गोरखपुर
४६. दैनिक जागरण, २७ जुलाई, १९९०, लखनऊ
४७. दैनिक जागरण, ६ अगस्त, १९९०, गोरखपुर
४८. दैनिक जागरण, १ सितम्बर १९९०, गोरखपुर
४९. राष्ट्रदूत, १५ सितम्बर १९९०, जयपुर
५०. आज, २० सितम्बर, १९९०, गोरखपुर
५१. स्वतन्त्र चेतना, ३० सितम्बर, १९९०, गोरखपुर
५२. आज, १५ अक्टूबर १९९०, नई दिल्ली
५३. दैनिक जागरण, २८ अक्टूबर १९९०, लखनऊ
५४. दैनिक जागरण, २८ अक्टूबर, १९९०, गोरखपुर
५५. दैनिक जागरण, आज, ६ नवम्बर, १९९०, गोरखपुर
५६. आज, लखनऊ मेल, स्वतंत्र चेतना, १६ नवम्बर, १९९०
५७. दैनिक जागरण, आज, सांध्य दैनिक, ८ दिसम्बर, १९९०, गोरखपुर
५८. आज, २३ जनवरी १९९१ गोरखपुर
५९. स्वतंत्र चेतना, २८ फरवरी, १९९१, गोरखपुर
६०. आज, २४ अप्रैल, १९९१, गोरखपुर
६१. आज, २४ अप्रैल १९९१, गोरखपुर
६२. आज, दैनिक जागरण, १८ जून, १९९१, गोरखपुर
६३. दैनिक जागरण, २५ अगस्त १९९१, गोरखपुर
६४. पाञ्चजन्य, ३१ अक्टूबर १९९१, नई दिल्ली
६५. स्वतंत्र चेतना, १३ जून, १९९२, गोरखपुर
६६. जनसत्ता, दैनिकजागरण, राष्ट्रीय सहारा, २४ जुलाई १९९२, नई दिल्ली

६७. स्वतन्त्र भारत, २६ जुलाई, १९९२, लखनऊ
६८. दैनिक जागरण, ३० जुलाई, १९९२, नई दिल्ली
६९. आज, १ अगस्त, १९९२, नई दिल्ली
७०. दैनिक जागरण, २२ अक्टूबर १९९२, देवरिया
७१. जनसत्ता, ३१ अक्टूबर १९९२, दिल्ली
७२. आज, दैनिक जागरण, २४ दिसम्बर १९९२, अयोध्या
७३. आज, अप्रैल, १९९३, सहारनपुर; राष्ट्रीय सहारा, १२ अप्रैल, १९९३, वाराणसी
७४. आज, दैनिक जागरण, जनसत्ता, ९ मई १९९३, दिल्ली
७५. दैनिक जागरण, ३० जून, १९९३, गोरखपुर
७६. आज, १९ अक्टूबर, १९९४, जोधपुर
७७. राष्ट्रीय सहारा, १४ फरवरी, २००२, लखनऊ, दिल्ली
७८. विवेकानन्द चरित, पृष्ठ ५३५
७९. लार्ड टी.वी. मैकाले का पिता को भेजे गये पत्र का अंश, उद्धृत-डॉ. लीना रस्तोगी, विश्वव्यापिनी संस्कृति, पृष्ठ ९०
८०. आनन्द कुमार स्वामी, द डान्स ऑफ शिव, पृष्ठ १७०